5676

चोम्पा

(गुच्छा)

मुण्डारी-हिन्दी लोकगीत संग्रह

गीतकार

चरण मुण्डा

हिन्दी अनुवाद एवं संकलनकर्त्ता

मंगल सिंह मुण्डा

करम सिंह मुण्डा

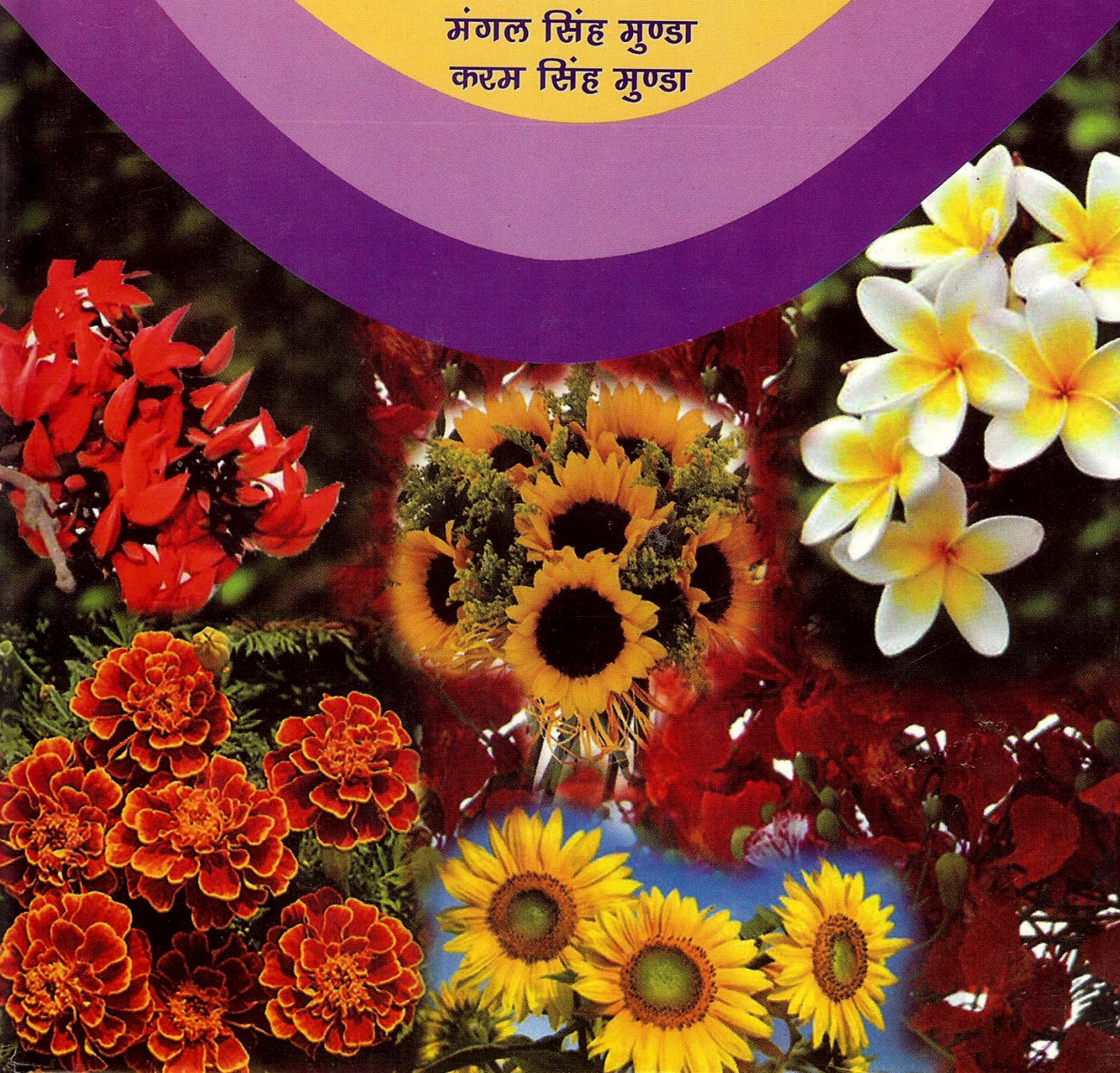

चोम्पा

(गुच्छा)

चोम्पा

(गुच्छा)

मुण्डारी-हिन्दी लोकगीत संग्रह

गीतकार

चरण मुण्डा

हिन्दी अनुवाद एवं संकलनकर्त्ता

मंगल सिंह मुण्डा

करम सिंह मुण्डा

झारखण्ड झरोखा, राँची

ISBN : 978-93-85595-07-3

प्रथम संस्करण : 2015

सर्वाधिकार © : मंगल सिंह मुण्डा

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा
दुकान न.- डी. जी. 03
न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन न. 834001
मो. 09973112040, 09471160792

वितरक : क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी
28, शॉपिंग सेन्टर, कर्मपूरा, न्यू दिल्ली–110 015
दूरभाष : (O) 25465978, 65903449 (R) : 28542847
E-mail : classicalpc@gmail.com

अजिल्द : 150.00
सजिल्द : 300.00

किसी भी प्रकार के कानूनी अथवा अन्य वाद-विवाद
के लिए प्रकाशक जिम्मेवार नहीं है।

CHOMPA

Edt. by Mangal Singh Munda
Karan Singh Munda

स्व. चरण मुण्डा के

परिवार वालों को

समर्पित

इस गीत-संग्रह के बहाने

मुण्डारी गीतों का यह संग्रह आपके हाथ में है। गीतकार ने गीत रचे। मैंने उनका प्रकाशन करवाया, बस। बात आयी और गयी।

हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में देखा जाय तो यह कोई अजूबा काम नहीं है। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य मण्डली में कोई रचनाकार कहाँ खड़ा है, जी रहा है कि मर रहा है, इसका किसी को खबर नहीं रहता है। इस क्षेत्र में क्षेत्रीयता का प्रकोप बढ़ रहा है। भाषा और सांस्कृतिक एक दूसरे के सम्पूरक हैं। भाषा की विकास संस्कृति की विकास है और संस्कृति की विकास भाषा की। देश का हर जागरूक समाज इन्हीं दो तत्त्वों के बल पर अपने को सभ्य बनाता है। अनन्य लोगों की बात छोड़ दें अब संथाली समाज भी इस ओर बहुत रफ्तार से आगे बढ़ रहा है। स्कूलों में अपनी भाषा का अविष्कार, ये उनके प्रमाण हैं। और तो और, संथाली भाषा को भारतीय संविधान की सूची में लाने का आन्दोलन भी उन्होंने छेड़ रखा है। जो भी हो, यह सब सामाजिक चेतना के बगैर संभव नहीं है।

ठीक इसी बिन्दु पर खड़े हो कर मैं अपने मुण्डा एवं अन्य आदिवासी समाज को देखता हूँ तो निराशा ही निराशा लगता है। इस तरह चेतना बिन्दु से कोसों दूर रहने को, हमारे लिये बिडम्बना एवं खतरे की घंटी मानता हूँ। यकीन मानें, जिस तरह जंगल में बाघ गये तो जंगल गये। इसी तरह हमारी संस्कृति गयी, हमारी भाषा गयी तो हम भी गये। हमारा अस्तित्व गया। बेशक! समाज को जागरूक बनाने में धन-दौलत एवं शिक्षा की जरूरत पड़ती है। पर क्या हम अब भी अपढ़ है?अब भी गरीब हैं? नहीं! (कम से कम पिछले दशक के बाद) अब हमारे पास सब कुछ है। पर एक चीज की कमी है। वह है-रचनात्मक बुद्धि। मतलब यह कि अपने प्रतिभाओं (जो भी हो) को चमक देने की, अवसर प्रदान करने की कोई योजनाबद्ध ज्ञान नहीं है जब कि अन्य सम्प्रदाय में यह बात पायी जाती है। तब परिणाम सामने दिखाई दे रहा है - हम जीवन में पछाड़ खा-मर रहे हैं।

कलकता प्रवास के दौरान इन्हीं विषयों पर चिंतन-मनन करता रहा। और 1994 में मन बना कि क्यों न मुण्डा समाज में ओझल हो रहा छैला सन्दु को खोज निकाला जाये! बस, उसके ऊपर बाल लीला, प्रेम लीला तथा मृत्यु लीला - तीन भाग लिख डाला। प्रकाशन के लिये कहीं से सुराग नहीं मिलता। पर प्रयास जारी रहा।

इसी दरम्यान शिक्षक श्री करम सिंह के माध्यम से चरण मुण्डा का पता चला। सम्पर्क किया तो सोने में सुहागा! प्रकाशन के अभाव में सैकड़ों गीतों की पाण्डु लिपि उनके यहाँ से प्राप्त हुआ। इसी तरह हमारे समाज में न जाने कितने प्रकार के मानवीय निधि बिखरे पड़े हैं, क्या पता! क्या, आज का युवा पीढ़ी इन बातों की महता समझेगी? हममें प्रतिभा की कमी नहीं है। भाव-विचारों के कंगाल नहीं हैं। हम अभावग्रस्त भी नहीं हैं। बस, जरूरत है उन प्रतिभाओं को, उन मनोभावों को, उन चिंतनों को स्वतः विकसित करने की, फल्वित-पुष्पित करने की। अपने को हीन भावनाओं से उबरने के मनोवृत्ति बढ़ाने की। और तो और, हम विचारों के कितने धनी हैं, इसी अदना-सा गीतकार के रचना-संसार में परिलक्षित होता है। गाना न.-1 से ही शुरू करें-''पेड़े:अन मुण्डा'' में गीतकार ने मुण्डा जाति के बुझदिली को दर्शाया है। गीतकार का कहना है कि ये किसी आततायी से नहीं डरते। क्योंकि उन्हें अपने भुजबल एवं कर्मठ हृदय पर पूरा भरोसा है। इन बातों का विश्लेषण करें तो यह दर्शन मात्र ही पूरी मानव जाति को समाज-परिवार में देश-दुनिया में सम्मान पूर्वक सिर उठा कर जीने-मरने का संदेश देता है। गाना न-15 की चर्चा करें। ''दिसुम रड़ा लड़ाई'' मतलब आजादी की लड़ाई। आततायों के खेमे से बन्दूकों की गड़गड़ाहट! तीरों की सैं-सैं वर्षा! इधर, सुखदेव बाबू सफेद घोड़े पर सवार हो कर रण-भूमि पर कूद पड़ते हैं। पर क्षणांश बाद वे घोड़े समेत शहीद हो जाते हैं। महान स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुण्डा इन जैसे गीतों से भी प्रेरित रहे हैं। इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिये। गाना नं.-78 पर्यावरण संरक्षण के बारे में है। सारा जंगल धू-धू कर जल रहा है। पर पता नहीं कि किसने आग लगायी है। हाँ, गाँव के गँवार धंगर दासिन पर शक-सुबह जरूर है। अंततः मतामत बनता है कि जा कर उन्हें समझा-बुझाया जाये कि ऐसा गलत काम प्राणी मात्र के हित के खिलाफ है। अतः ऐसा बुद्धिहीन काम कमी नहीं करना चाहिये। 104 नं गाना-''पिरिति-पाला'' प्रेम के बारे में है। सहसा आभा भरे मन से नायिका नायक को कुछ कह बैठती है। बस, इसी में नायक का मन व्याकुल हो उठता है। दिन को उसे खोजता-फिरता है। फिर रात को सपने में भी उसे देखत है....।

आशा है हमारे एवं गीतकार के इन तनिक ''संयुक्त प्रयास'' से आने वाली पीढ़ी को संवारने में मदद मिलेगी।

मंगल सिंह मुण्डा

कलकता, 13.10.2000

विषय सूची

			पृष्ठ संख्या
1.	पेड़े : अन मुण्डा	ताकतवर मुण्डा	12
2.	मई!	लड़की	12
3.	संगा आर हाई	कन्दमूल और मछली	14
4.	राजा बा - सिन्दुरी उली	राजा फूल तथा सिन्दूरी आम	14
5.	डोण्डो मेरेल	नसमझ आंवला	16
6.	एतेर चेड़ें!	सावधान पंछी	18
7.	अतुतन ईंग	मझधार में बह रहा हूँ	18
8.	सिंम बोंगा	नारायण भगवान	20
9.	कमि होड़ो होन	कामगर आदमी	22
10.	सोंगती गतिंग	सखा सहेली	23
11.	टुअर होन	अनाथ बच्चा	24
12.	हड़म दिसुम	बुढ़ाउ पृथ्वी	24
13.	आगामारी को	आगामरी पंक्षी	26
14.	जीवोन जामा	जीवन यात्रा	28
15.	दिसुम-रड़ा लड़ाई	आगादी की लड़ाई	28
16.	राम-रावोण लड़ाई	राम-रावण की लड़ाई	30
17.	मौतिया	महावत	32
18.	सिंगर-सम्पोड़ो	साज-शृंगार	32
19.	अते मई!	क्यों रे लड़की!	34
20.	मुश्किल	बिडम्बना	34
21.	बा-रसिका	आनन्द राजा सरहुल	36
22.	रसिका-रानी	रसिक-रानी	38
23.	लन्दातन बा	हँसता फूल	38
24.	अकाल	अकाल	40
25.	जी अकल-बकल	दुविधा मन	40
26.	सिंम बोंगा	विधाता	42

27. लिपि चेंगें	लिपि पक्षी	44
28. सोंगे	साथी	46
29. बेपारी को	व्यापारीगण	48
30. मैनो	मैना पक्षी	48
31. सालू चेगें	सालू पक्षी	50
32. तुड़कु ओड़ोः विलायति करेंगा को	देश-विदेशी हमलावर	52
33. पोरबो विदा	त्योहार की विदाई	52
34. गति पिरिति	प्रीति पाला	54
35. दिसुम जंजाल	हल्दी घाटी की लड़ाई	56
36. सेनोः तन सोमय	ढलती उम्र	58
37. अईञः सोमय तैकेन रे	जब मैं समय की बुलन्दी पर थी	58
38. मरंग अकाल	महाकाल	60
39. कुड़ि होनः खींसी	कन्या का क्रोध	62
40. बपागे	विरह में	62
41. टुअर होन	अनाथ बच्ची	64
42. बा	फूल	64
43. बिर सेंगेल	दवानल	66
44. हे गाड़ी	हे बन्दर!	68
45. मनी अड़ाः	लहलहाता सरसों	68
46. किकिर चेगें	किंग फिसर	70
47. जोजोः निः	झाड़ुदारिन	70
48. बोंगा बा-राजा बा	बोंगा फूल राजा फूल	72
49. लन्दातन बा	हँसता फूल	74
50. गामा दः	वर्षा	74
51. होएवो दुदगर	हवा का झोंका	76
52. कुला-बिंग	नाग और बाघ	78
53. जड़म-जड़म दः गामा	रिम-झिम बारिश	78

54. रेंगेः	गरीबी	80
55. सालू आर केयाद	सालू और तोता	82
56. बिन्दी कुड़ि	बिन्दी	84
57. दुलड़ होन्	लाडला औलाद	84
58. पोरबो	त्योहार	86
59. रबंग	ठण्ड	88
60. जोनोः आर क्योः	झाड़ु और पट्टा	90
61. छिलन	कुसंस्कार	90
62. डोण्डो मुण्डा को	अपढ़ मुण्डाजन	92
63. बाबा रोवा	धान रोपाई	92
64. लुमंग	तसर	94
65. उरू	कीट	96
66. रसिका रासि	रसिक	96
67. सकम चरिः	पत्ता और बित्ती	98
68. जगर	संवाद	100
69. पिरिति नाड़ी	प्रेम-लता	100
70. गोनोए	मृत्यु	102
71. कलियुग	कलियुग	102
72. रेंगेः बलय	गरीबी-बदहाल	104
73. कुपुल माईन	अथिति सत्कार	104
74. किचिरि नुरा	घाट पर	106
75. सेन्देरा	शिकार	108
76. सेन्देरा कोड़ा को	शिकारी	110
77. असरए रे	आस में	110
78. बुरू सेंगल	दवानल	112
79. जीवोन जंजाल	जीवन-जंजाल	114
80. बाजा	वाद्य यंत्र	116
81. जो	फल	118

82. बा-नेग	सरहूल त्योहार	118
83. हाई को	मछलियाँ	120
84. इकिर दः	जलाशय	122
85. बा-सोवन	खुशबू	124
86. कमि होड़ो को	काम-धन्धे के लोग	124
87. बा	फूल	126
88. दंगड़ि कुड़ि	युवा लड़की	128
89. बा-दारू	फूल-पौधे	128
90. सेन्देरा	शिकारी	130
91. बाड़ी दः	बाढ़ का पानी	130
92. हिंसिंगा	डाह	132
93. जनुम	काँटा	134
94. हलंग	चुनना	136
95. अँड़न्दि कुड़ि	विवाहित स्त्री	136
96. बलेः सोमय	बचपन	138
97. चितरि-असाकल किंग	तीतर बटेर	140
98. ब्रोज बला कृष्ण	बाल कृष्ण	140
99. दंगड़ी सोमय रेयः कजि	भरी जवानी की बात	142
100. सुकु सामय रेयः कजि	सुखमय जीवन	144
101. जाति डुबाब	अछूत	146
102. कृष्ण दोरोशोन	कान्हा दर्शन	148
103. बा-चण्डुः	सरहुल का महीना	148
104. पिरिति पाला रेयः कजि	प्रीत-पाला	150
105. डिण्डा दंगड़ी	कँवारी लड़की	152

जदुर

दुरंग–1

राग - जदूर
विषय - पेड़ेः तुला
सोमय - अगन एनेटे–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

पेड़े : अन मुण्डा

डुराड़ी गड़ा कुदन सै, का होए बोरोया।
रामगढ़ रोतोन सै, का होए नेकेलावा।।1।।
दिकु–सिपई रे, का होए बोरोया।
तेलेंगा–चपरासी रे, का होए नेकेलावा।।2।।
दिरी लेका कुड़म तीया का होए बोरीया।
पडंगा लेका सुपु तीया, का होए नेकेलावा।।3।।

दुरंग–2

राग - जदूर
विषय - कुड़ि होनः नगेन
सोमय - अगन एनेटे–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

मई!

नेंगामे को बा–कटब तना मई कुण्डमे रेम् तिंगुआ कन्।
नपुमे को गिड़ि तोरोए तना मई सलन्दी रेम् जपगा कन्।।1।।
कुण्डमे रेम् तिंगुआ कन् मई, चन्दय दः दो जोरो तन्
सलन्दी रेम् जपगा कन् मई, कुडम नसा नदिड़ी तन्।।2।।

दुरंग–1

राग – जदुर
विषय – ताकतवर मुण्डा के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

ताकतवर मुण्डा

डुराड़ी गड़ा नामक गांव का कुंदन मुण्डा नहीं डरने वाला।
रामगढ़ का रोतोन नहीं हिलने वाला।।1।।
(वह) बलशाली दरोगा-सिपाहियों से नहीं डरने वाला।
(वह) तेलंगना नौकरी बाबुओं से नहीं हिलने वाला।।2।।
(वह) चट्टान की तरह छाती वाला है, वह नहीं डरने वाला।
(वह) कुन्दे के समान भुजाओं वाला है, वह नहीं हिलने वाला।।3।।

दुरंग–2

राग – जदुर
विषय – युवती के लिए
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

लड़की

(तेरी) माताएँ सरहुल त्योहार पर उपवास करने लगी हैं।
(पर) तुम तो पिछवाड़े में (गुमशुम) खड़ी हो।।
(तुम्हारे) पितागन गिड़ि तोरोएं करने गए हैं।
(पर) तुम तो (बाहर, खाई के नजदीक) दुबक पड़ी हो।।1।।
पिछवाड़े में खड़ी हो, छत का पानी (तुम पर) गिर रहा है।
खाई के नजदीक दुबक पड़ी हो, मिट्टी का पिण्ड तो खिसक रहा है।।2।।

गिड़ि तोरोए - एक तरह का रिवाज।

दुरंग–3

राग – जदूर
विषय – सोंगे–साथे रेयः जगर
सोमय – अगन एनेटे–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

संगा आर हाई

सोसो कुटीः बरू जोला रे, संगा हो दिले–दोंगोबा।
इचः लोर बन्दु सोकोड़ा रे, हाई हो को सिगिल बिगिला।।1।।

संगा हो दिले दोगोबा, संगा हो उरा लंग्ड़ में।
हाई हो को सिगिल बिगिला, हाई हो नरेगा लंग्ड़ में।।2।।

संगा होईंग नुरे केना, संगा हो रेद चबा जानू
हाई होईंग नरेः केनू, हाई हो को चोके चबा जाबू।।3।।

दुरंग–4

राग – जदूर
विषय – सिदा सोमय रेयः हुनर
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

राजा बा – सिन्दुरी उली

अटामटा बिरको ताला रे,
सिन्दुरी उंलीग्ड़ रोवा लेद्।
रमेकन मारेचा रे,
राजा बा बाईग्ड़ पोआ लेद्।।1।।

दुरंग–3

राग – जदुर
विषय – दोस्तानी की बात
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

कन्दमूल और मछली

भेलवा तथा कुसुम वृक्षों के ढ़लान पर,
कन्दमूल लहलहा रहा है।
इचः नाला तथा गोरार लरंग के तराई पर,
मछलियाँ जलक्रीड़ा कर रही हैं।।1।।

कन्दमुल लहलहा रहा है,
हे बन्धु! उन्हें खोद कर लाओ।
मछलियाँ जलक्रीड़ा कर रही हैं,
हे बन्धु! उन्हें पकड़कर लाओं।।2।।

हे बन्धु! कन्दमूल खोदने गया (तो)
वे सब जड़ से बैठ गए।
हे बन्धु! मछलियाँ पकड़ने गया (तो)
सब के सब मेंढक बन गयीं।।3।।

इच : झाड़ी विशेष

दुरंग–4

राग – जदुर
विषय – बीते दिनो की याद में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

राजा फूल तथा सिन्दूरी आम

घनघोर जंगल के बीच,
(लाल–पीले पकने वाला) आम रोपा था।
विशाल मैदानी भाग में राजा फूल का बीज छिटकाया था।।1।।

सिन्दुरी उलीग्ड़ रोवा लेद्
मियद गे जो लेन्।
राजा बा बाईगु पोआ लेद्
बरिया गे बा लेन्।।2।।

मियद गे जो लेन्
जोजोम हुति गे जोमे केद्
बरिया गे बा लेन्
चाँया गे चेपेः केद।।3।।

दुरंग–5

राग - जदूर
विषय - डोण्डो सेडाँ नगेन्
सोमय - अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

डोण्डो मेरेल

ने मेरेल डोण्डो मेरेल,
सकमे रे जो जान्।
ने कुड़ि डोण्डो कुड़ि
हिरूम् रे कोन्यान् जान्।।1।।

सकमे रे जो जान्
सुड़ा-सकम ओटंग्ड़े जान,
हिरूमे रे कोन्यान जान्
ससग्ड़ साड़ी दोपलि जान्।।2।।

सुड़ा-सकम् ओटंग्ड़े जान्
जी राटि लिटिब-लिटिबा।
ससग्ड़ साड़ी दोपलि जान्
कुड़म् राटि दोपोल-रोपोला।।3।।

जी सटि लिटिब-लिटिबा
कचि हो बोरो तिया,

छाती धक-धक करने लगा है
(वह) क्या आतंकित है। ।4।।
पत्तों को क्यों डर नहीं है?
दावानल तो दहक रहा है।
लड़की क्यों आतंकित नहीं है?
(उसका) सौतिन तो चिड़चिड़ी है। ।5।।

दुरंग-6

राग - जदुर
विषय - शिकारी तथा चिड़िया
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अभी मौकों पर।

सावधान पंछी

हे पँड़की! चट्टान के ऊपर स्थित चुएँ में (पानी पीने) मत उतरना।
हे पेरोवाँ! पथरीली नाले के नीचे (चरने के लिए) मत उड़ो। ।1।।
हे पँड़की मत उतरना (क्योंकि) मुण्डा लड़का तीर-धनुष साध रहा है।
हे पेरोवाँ मत उड़ना (क्योंकि) संताड़ लड़का गोंद तैयार कर रहा है। ।2।।
हे पँड़की वह तुम पर तीर चला देगा तो मरे पड़े रह जाओगे।
हे पेरोवाँ वह तुम्हें गोंद से लपेट लेगा तो लटके पड़े रह जाओगे। ।3।।

अटा-लसा - पीपल तथा डूमर पेड़ के रस से गोंद बनता है जो बाँस के तील्लियों के सहारे पक्षियों को पड़कने के काम में लाया जाता है।

दुरंग-7

राग - जदुर
विषय - माता-पिता को बुलाहट
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अभी मौकों पर।

अतुत नईंग

हायरे नेयग्ड़ हाय रे नपंग्ड़, गड़ा तेंईग्ड़ अतु तान्।
हायरे नेयग्ड़ हाय रे नपंग्ड़, नई तेईग्ड़ बुअले तान्।।1।।

मरे बाबू मरे बचा रे, गड़ा कड़े रे सबे दड़ीन में।
मरे बाबू मरे बचा रे, नैमो-नच लेरे रचः दड़ीन में।।2।।

हाय रे नेयग्ड़ हाय रे नंपग्ड़ गड़ा कड़े दो सिदे जान्।
हाय रे नेयग्ड़ हाय रे नंपग्ड़ नैमी-नचले दो रोचोद जान्।।3।।

हाय रे नेयग्ड़ हाय रे नंपग्ड़, बिंग को इकिरे रिंग्ड बिउरे तान्
हाय रे नेयग्ड़ हाय रे नंपग्ड़, तयने को मण्डवा रेंग्ड़ सेकोरे तान्।।4।।

दुरंग-8

राग - जदूर
विषय - सिंम-बोंगाः नगेन्
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

सिंम बोंगा

हाय नरन् गंगा नरन् हेड़ेंः लेकम् जला तींग तान्।
हाय नरन् गंगा नरम् डुलुः लेकम् बुला तींग तान्।।1।।

हेड़ेंः लेकम् जला तींग तान्, कण्डा तम जुले तान्।
डुलुः लेकम् बुला तींग तान्, पिरितम् लिंगी तान्।।2।।

कण्डा तम् जुले तान्, तारा दिशुम लो तान्।
पिरि तम् लिंगी तान् तारा गमय बले तान्।।3।।

लाल-पीला आम रोपा था,
(पर) एक ही फल दिया।
राजा फूल का बीज छिटकाया था,
(पर) कीड़े ने कुतर डाला।।2।।

दुरंग-5

राग - जदुर
विषय - ब्योकूफी के संबंध में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

नसमझ

हाय! यह ब्योकूफ अँवला,
पत्तों पर ही फल दे डाला।
हाय! यह नसमझी लड़की
सौत बन कर आयी।।1।।
पत्तों पर फल दिया,
हाय, वे तो झड़ गयीं।
सौत बन कर आयी,
हाय, हल्दी रंगा साड़ी तो उड़ गयी।।2।।
पत्ते झड़ गए हाय,
मन तो कुलबुलाने लगा है।
सौत बन कर आयी,
हाय, छाती तो धर्क धक करने लगा है।।3।।
मन कुल बुलाने लगा है,
(वह) वह क्या डर रही है?

कुड़म् रटि दोपोल-दोपोला
कचि हो चिरि तिया ।।4।।
कचि हो बोरो तिया
बुरू सेंगेल हंगर-हंगारा ।
कचि हो चिरि तिया
सिदा कुड़ि दंगर-दंगारा ।।5।।

दुरंग-6

राग - जदूर
विषय - सेंदरा को आर चेंड़े
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे ।

एतेर चेड़ें!

सेरेंग चेतन डड़िदः रे पुतामींग, अलोम् हड़ा गुनाया पुतामींग ।
रूगड़ी लतर सुईदः रे परयलू नलोम् नोसोरेन् ।।1।।
बलोम हड़ा गुनया पुतामी, मुण्डा होन् टोटेः रिले तन्
नलोम् नोसोरे नाया परय लू, सन्ता होन आटाए लसा तन् ।।2।।
टोटे केम् रदो-ओ पुतामी, टोटे रिनि रिपि ।
अटा केम् रेदो, परय लू, अटा लेपा लड़ी ।।3।।

दुरंग-7

राग - जदूर
विषय - होन्-होपन् कोलोः जगर
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे ।

मझधार में बह रहा हूँ

हे मेरे माता-पिता! नदी की धारा में बहे जा रहा हूँ।
हे मेरे माता-पिता! नाली में डूब रहा हूँ।।1।।
हे हमारे लाड़ले (उस) कांसी फूल को सहारा बना लो।
हे हमारे प्यारे पुत्र (उस) नचल पेड़ के डाली को सम्बल बना लो।।2।।
हे मेरे माता-पिता! कांसी फूल का सहारा तो टूट गया।
हे मेरे माता-पिता! नचल पेड़ की डाली तो छूट गयी।।3।।
हे मेरे माता-पिता! (अब) साँप का बासा गहराई में घूस रहा हूँ।
हे मेरे माता-पिता! (अब) मगरमच्छों के कुण्डलियों के साथ सरक रहा हूँ।

नंचल - एक पेड़ विशेष।

दुरंग-8

राग	-	जदुर
विषय	-	सर्वशक्तिमान नारायण के विषय में
समय	-	अगहन से बरसात तक
मुहुर्त	-	अभी मौकों पर।

नारायण भगवान

हे अपार भक्ति वाला नर-नारायण भगवान, तुम बुबिल चिड़िया
के समान सारे आकाश में विचर रहे हो।
हे सर्वशक्तिमान ईश्वर तुम फतिंगे के समान आकाश में इधर
उधर (सर्वत्र) उड़ फिर रहे हो।।1।।
तुम बुबिल चिड़िया के भाँति विचर रहे हो, तुम्हारा ढ़ाल चमक रहा है।
तुम फतिंगे के समान उड़-फिर रहे हो तुम्हारी तलवार की धार
(धारा की भाँति) बह रही है।।2।।
तुम्हारा ढाल चमक रहा है जिससे आधी दुनियां जल रही है।
तुम्हारी तलवार में धार बह रही है जिससे आधा देश जलमग्न हो रहा है।।3।।

दुरंग-9

राग - जदूर
विषय - कमिया होड़ो नगेन्
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

कमि होड़ो होन

होरा रे दूती- गमछा, सी तनःए चलु तान्।
डरेन रे निला पगारी, होरो तनाए जंगी तान्।।1।।
सी तनए चलु तानाए, मण्डि हो इदियई पे।
होरो तनए जंगी तानाए, दगे हो सेटें राईपे।।2।।
मण्डि हो ले इदियईया, मण्डि हो कगे जोजोमा।
दगे होले सेटे राईया, दगे हो कगे नुनुवा।।3।।

दुरंग-10

राग - जदूर
विषय - संगे-सोंगती नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

सोंगती गर्तिंग

दे दो रे नोचो दोरे, तीरे दो नलोम् सबिंग्ड़ा
दे दो रे नीचो दोरे, होटोः रे दो नलोम गतिग्ड़ा।।1।।
तीरे दो नलोम् सबिंग्ड़ा तीरे दो रूपा बेरा।
होटोः रे दो नलोम गतिंग्ड़ा, होटोः रेदो कड़े माला।।2।।
तीरे दोईग्ड़ सबे मेगेया, तीरे दो सबे-सोंगती।
होटोः रे दोईग्ड़ गति मेगेया, होटोः रेदो गति पीरिति।।3।।

दुरंग–9

राग – जदुर
विषय – कामगर के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अभी मौकों पर।

कामगर आदमी

रास्ता के किनारे धोती-गमछा वाला किसान हल-कुदाल चला रहा है।
पगडण्डि के किनारे नीला पगड़ी वाला नौकर औधर दे रहा है।।1।।
वह हल-कुदाल चला रहा है, उसे खाना तो खिलाओ।
वह औघर दे रहा है उसे पानी तो पिलाओ।।2।।
हमने उसे खाना दिया (पर) वह नहीं खाता।
हमने उसे पानी दिया (पर) वह नहीं पीता।।3।।

दुरंग–10

राग – जदुर
विषय – प्रीति पाला
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अभी मौकों पर।

सखा सहेली

हाय! तुम मेरे हाथों को मत छुओ।
हाय! तुम मेरे गले पर हाथ मत रखना।।1।।
मेरे हाथों को मत छुओ (चूँकि) वहाँ चाँदी का बोरा है।
मेरे गले को हाथ मत लगाना (चूँकि) काँसी फूल का माला है।।2।।
नहीं प्रिय! मैं तेरे हाथों को छूँगा ही (चूँकि) वहाँ तो प्रेम बंधन है।
नहीं प्रिय! गले पर हाथ डालूँगा ही (क्योंकि) वहाँ तो प्रेम-माला है।।3।।

दुरंग–11

राग – जदूर
विषय – टुअर होनः नगेन्
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

टुअर होन

दादाया हाउ–पोटोम बन्दी बाबा रे,
दादाया कुपुल लंग्ड में।
दादाया इलि रासे टेण्डः इलि रे,
दादाया पेडालंग्ड़ में।।1।।

बाबू रे को सुकुवा लंग्ड़ःचि
बाबू रे एंगा टुअर दो।
बाबू रे को नपयङ्ग लंग्ड़ा चि
बाबू रे अपु टपर दो।।2।।

दुरंग–12

राग – जदूर
विषय – हड़म तन दिसुम नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

हड़म दिसुम

अमना मई बलेः तेमरे
बुण्डु बिर बिरे लेना।
अमना मई लिंडुग्ड़ तेमरे
कुकरू डाड़ी दः पेरे लेन्।।1।।

अमना मई माता जान्

दुरंग–11

राग - जदुर
विषय - अनाथ बच्चे के लिए
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अभी मौकों पर।

अनाथ बच्चा

हे भईया! अगर भाभी जी को लाएंगें तो
चलता-पूर्जा घर से ही लाएंगें।
(और) जहाँ मुध हड़ियाँ का प्रचलन हो,
आचार-विचार, मान-मर्यादा अच्छा हो।।1।।

(लेकिन) हे भाई! यह कैसे संभव है,
हम तो माता के अनाथ हैं।
(फिर) ऐसा घर कैसे मिले जबकि हम,
पिता के भी अनाथ हैं।।2।।

दुरंग–12

राग - जदुर
विषय - बुढ़ाना पृथ्वी के बारे में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अभी मौकों पर।

बुढ़ाउ पृथ्वी

हे बिटिया! तुम जब बच्ची थी,
तब बुण्डु शहर जंगल से घिरा हुआ था।
तुम जब शिशु अवस्था पर थी तब
(उस) कुँआँ में तबालब पानी भरा था।।1।।

हे बिटिया! तुम जवान हुई तो
बुण्डु का जंगल उजड़ गया।
तुम जब बालिग बनी तो
कुएँ का पानी सूख गया।।2।।

बुण्डु बिर बिरे उजड़ जान।
अमना मई सेंड़ा जानू
कुकरू-डाड़ी दः अजेंद जान।।2।।

दुरंग-13

राग - जदूर
विषय - आगातारी चेणें को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

आगामारी को

आगामारी कोदो रेको गेयोनू-गेयोनू
चुटि कनासुल रेदो रूपा मुंदमू
दरोम दः कोदो रेको लेपा लड़ी,
सुबा सेरोम मेरे मूँगा-माला।।1।।

चुटि कनासुल रेदो रूपा मुंदमू
ओको कोरे हो को हड़ागुन जनू।
सुबा सेरोम रे मूँगा माला
चिमय कोरे होको नोसोरेन जनू।।2।।

बुण्डु पिड़ि रे हो चामा गेले,
चामा गेले रे को हड़ागुन जन,
तामाड़ बादी रे हो डम्बुर डेम्बो
डम्बुर डेम्बो रे को नोसोर जनू।।3।।

कुकरू डाली - कोई बड़ा वृक्ष मरने पर धड़ को पुर्सा भर काट दिया जाता है। फिर उसके बीचो बीच खोद कर पानी निकाला जाता है जो छोटा-मोटा कुएँ का शक्ल ले लेता है।

दुरंग-13

राग - जदुर
विषय - आगामारी पंक्षी के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अभी मौकों पर।

आगामरी पंक्षी

देखो तो! आकाश में आगामारी पक्षीगण कैसे
कतारबद्ध उड़ रहे है। (और) उनके डैने के आखिरी
पंख पर चाँदी की बेड़ी कैसे चमचमा रही हैं?
और देखो! वर्षा को निमंत्रण देने वाले पंक्षीगण
(चील तथा हेड़े:) भी कैसे उलट-पुलट कर उड़ रहे हैं
जिनके गले पर रंगों की माला कैसी शुशोभित है?।।1।।

पंखों पर चाँदी का बेरा पहने
(ये पंक्षी) भला कहाँ उतरने वाले हैं?
गले पर मूंगे की माला पहने
(ये पंक्षी) भला किधर उड़ने वाले है?।।2।।

बुण्डु शहर के मैदानी भाग में चमा घास का फूल
लहरा रहा है। (वे) उन्हीं पर उतर गए।
तामाड़ शहर के तराई वाले भाग में डम्बुर की कलियाँ
लहलहा रही हैं (वे) उधर ही उन्मुक्त हुए हैं।।3।।

आगामारी - पक्षी विशेष
चमा, डम्बुर - घास विशेष
हेड़े: - पक्षी विशेष

दुरंग–14

राग – जदूर
विषय – जीबोन जामा
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

जीवोन जामा

चुटी मूल सरजोमः रे अमची मिरू ईयामेया
नाते बन्दु लतारेरे अमची कारे सयादेया।।1।।
अईगेचा ईयामेया, चुटी कोतो हुलः जन्
अईंगेचा सयादेया सुबा दाड़ा चंगड़ा जन्।।2।।
अलो मिरूम् ईयामेया, गपा गे सुड़ा रूड़ावा
अलो कारेम् सयादेया, मेयांग्ड़े दाड़ा रूड़ावा।।3।।
गपा गे सुड़ा रूड़ावा, सिदा लेका दो कागे सुड़ावा
दाड़ा दो राड़ा रूड़ावा, जाओगे लेका दो कागे रूड़ावा।।4।।

दुरंग–15

राग – जदूर
विषय – विलायती साहेब को आर दिसुम् होड़ो कोवः लड़ाई
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

दिसुम-रड़ा लड़ाई

रासल-क्योंजरी बन्दुकु दो दादा
बन्दुकु दो ठसाठासी।
रासल-क्योंजरी टेम्पा सार दो दादा
सार दो जड़म्-जड़ामा।।1।।

दुरंग–14

राग – जदुर
विषय – जीवन यात्रा संबंधी
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

जीवन यात्रा

साल वृक्ष के कोपलों पर,
(क्यों) मिरू, तुम ही रोया करोगे?
गोरार लरंगों की झाड़ी में,
(क्यों) कारे, तुम्हारी छाती के धड़कन की ही आवाज है? ।।1।।
(हे दुनिया वालों!) मैं ही रोता हूँ क्योंकि
साल वृक्ष की डाल टूट गयी है।
(हे भाई!) मेरी छाती की ही धड़कन की आवाज
आ रही है क्योंकि वृक्ष का धड़ ही खोखला पड़ गया है।।2।।
(हे मिरू!) मत रोया करो, कल ही दूसरी डाल निकल आएगी।
(हे कारे!) घबड़ओं नहीं, दूसरे दिन ही खोखलापन भर जाएगा।।3।।
(नहीं बन्धु) दूसरी डाल निकले, तब भी पहले जैसा नहीं होगी।
(नहीं दोस्त, नहीं) खोखलापन भरेगा भी तो
पहले के समान मजबूत नहीं बज पायेगा।।4।।
मिरू, कारे – पक्षी विशेष

दुरंग–15

राग – जदुर
विषय – स्वतंत्रता–संग्राम से सम्बन्धित
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अभी मौकों पर।

आगामरी पंक्षी

रासल – क्योंझर (उड़ीसा) द्वारा निर्मित बन्दूक तो
हे दादा भाई! ठस–ठस आवाज दे रहे हैं।
रासल – क्योंझर बासियों के तीर धनुष तो
हे दादा भाई! पानी जैसा बरस रहे हैं।।1।।।

बन्दुकु दो ठसाठासी
सुकदेव बाबू दोला केन दोला ।
सार दो जड़म-जाड़ामा
पुण्डी सदोम् किकिः केन किकिः । ।2 । ।
सुकदेव बाबू दोला केन दोला
सुकदेव बाबू सिदा-गुलि जन्
पुण्डी सदोम किकिः केन किकिः
पुण्डी सदोम तयोम-सारे जन् । ।3 । ।
सुकदेव बाबूए सिदा-गुलि जन
हिसि मुका पगारी मयोम् जन्
पुण्डी सदोम तयोम-सारे जन
गेले बारे गमय किरूम जन् । ।4 । ।

दुरंग-16

राग - जदूर
विषय - राम-रावण लड़ई सोमय
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे ।

राम-रावोण लड़ाई

रामे-लोकोन् किंग्ड़ लोंका लो तन्
सीता ठकुरानी, ओजोईदान बले तन् । ।1 । ।
ओकोएगे ओण्डोरे तद्, लोंका लो तन्
चिमैगे जुण्डी तद्, ओजोईदान बले तन् । ।2 । ।
दासी कोड़ा ओण्डोर तद्, लोंका लो तन्
कमिड़ी कुड़ी जुण्डी तद्, ओजोईदान बले तन् । ।3 । ।

बंदूकें ठस-ठस आवाज दे रहे हैं,
(उधर) सुखदेव बाबू "चलो-चलो लड़ने जायें"
चिल्लाने लगे हैं।
तीन-धनुष पानी जैसा बरस रहे हैं,
(उधर) सफेद घोड़ा हिनहिनाने लगा है।।2।।

सुखदेव बाबू चलो-चलो कह रहे हैं,
(पर) उन्हीं को पहली गोली लगी।
सफेद घोड़ा हिनहिनाने लगा हैं, (पर)
उसी को पहला तीर लगा।।3।।

सुखदेव बाबू को पहली गोली लगी,
हाय! बीस हाथ पगड़ी खून से सन गयी।
सफेद घोड़े को पहली तीर लगी,
ओह! बारह हाथ गमछी रक्त से पट गयी।।4।।

दुरंग-16

राग - जदुर
विषय - राम-रावण की लड़ाई
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अभी मौकों पर।

राम-रावण की लड़ाई

हे राम और लक्ष्मण! देखें, लंका जल रहा है।
हे सीता ठकुरानी! देखें, अयोध्या भस्म हो रहा है।।1।।

किसने आग लगा दिया है देखो, लंका जल रहा है।
किसकी चिराग से देखो, अयोध्या भस्म हो रहा है।।2।।

धाँगर (हनुमान) ने आग लगा दिया है देखो, लंका जल रहा है।
दासी (राक्षसी) ने चिराग से देखो अयोध्या भस्म हो रहा है।।3।।

दासी - राम-रावण युद्ध के समय अयोध्या को क्षति पहुँचाने के निमित्त भी रावण ने किसी गुप्तचर को भारत भेजा होगा।

दुरंग–17

राग - जदूर
विषय - मौतियाः नगेन
सोमय - अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

मौतिया

हतिया–मौतिया हति तम् निरे तन्
सदोमा–चेंरोवाँ सदोम तम् नोजोरेन तन्।।1।।
हति तम् निरे तन् अटा–माटा बिरको ताला ते
सदोम तम नोजोरेन तन् रमेन्दन मारेचा ते।।2।।
तोलि मेजा तोलिमे मेड़ेद् मुडुकम् रे
नवाड़ाई मेजा नवाडाईमे, सुतम् सोतरंगी रे।।3।।

दुरंग–18

राग - जदूर
विषय - सिगर–सम्पोड़ो
सोमय - अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

सिंगर–सम्पोड़ो

नेया दोगा चिकन सुनुपिद् जोलो मोलोवा
नेया दोगा मेरेकन कद्सोम पड़िया रिगि मिगि।।1।।
नेया दोगा मनी सुनुम् सुनुपिद् जोला मोलोवा
नेया दोगा जाति कद्सोम पड़िया रिगिमिगि।।2।।

दुरंग–17

राग – जदुर
विषय – महावत के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अभी मौकों पर।

महावत

हाय! देखो महावत, तुम्हारा हाथी तो भाग रहा है।
हाय! देखो घोड़सवार, तुम्हारा घोड़ा तो खिसक रहा है।।1।।
देखो, हाथी भाग रहा है बियावान जंगल के बीच।
देखो, घोड़ा खिसक रहा है विस्तृत तराई की ओर।।2।।
बाँधो-बाँधो उसे, लोहे के खूँटी में बाँधो।
बझाओ-बझाओ उसे, रंग बिरंगी सूत से बझाओ।।3।।

दुरंग–18

राग – जदुर
विषय – साज–शृंगार
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अभी मौकों पर।

साज–शृंगार

हे माँ, यह किस चीज से सज्जित खोंपा है जो झलमल दिख रहा है।
हे माँ, यह किस सूत से बनी साड़ी है जो धारीदार दिख रहा है।।1।।
हे बेटी, यह सरसों तेल में चुपड़ा खोंपा है जो झलमल कर रहा है।
हे बेटी, बड़ी जाति वाली कपास का सूत
हो जो धारीदार दिख रहा है।।2।।

दुरंग–19

राग – जदूर
विषय – कुड़िहोनः नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – तिकिन सोमय कोरे।

अते मई!

बा–चण्डुः मुलुः लेना मई, बा–हसाम् आदेरा कद्
सिंगी दोए तीकिन जनू मई, नाड़ाकम् लोवद् कद्।।1।।
गतिम् दो बंगाईः मई, ओकोए लोःमू जोलोमे
संगमे दो बंगाईः मई, चिमै लोःम नाड़ाकानू।।2।।
गतिम् होनंग्ड़ मेनई रे दो, गतिम् लोःमू जोलोमे ते
संगम होनंग्ड़ मेनई रे दो, संगम लोःमू नाड़ाकानते।।3।।

दुरंग–20

राग – जदूर
विषय – कुड़ि होनः नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

मुश्किल

होरा रे सरजोम बा,
लेसे केन लेसे केनू।
डारेन रे हेन्दे हपानुम्,
मोचो केम् मोचो केनू।।1।।
लेसे केनू लेसे केनू,
तीते हो कागे तेबागोः।
मोचो केनू मोचो केनू,
मोचा तेव कएः जगारा।।2।।

दुरंग–19

राग – जदुर
विषय – युवती के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – दोपहर को।

क्यों रे लड़की

सरहुल का चाँद निकला कि नहीं, तुमने (घर की पोताई के लिए) माटी ले रखी है।
अभी दोपहर हुआ कि नहीं, तुमने (सिर धोनेवाला) नगाड़ा मिट्टी भिंजा रखी है।।1।।
(हाय) तेरी सहेली तो नहीं है, किसके संग पोताई करोगी?
(हाय) तेरी सखा सखी तो नहीं है, किसके संग नहाओगी।।2।।
तेरी सहेली रहती तो उसके संग पोताई करती।
तेरी सखी रहती तो उसके संग नहाती।।3।।

सरहुल – मुण्डाओं में सरहुल का त्योहार उल्लास का त्योहार होता है। घर–द्वार की सफाई की जाती है। साथ–साथ खुद की सफाई भी जाती है।

दुरंग–20

राग – जदुर
विषय – युवती के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – दोपहर को।

बिडम्बना

रास्ते पर (फूलों से लदा) साल वृक्ष,
विशाल और लहरा रहा है।
पगडंडी के किनारे (काली) युवती,
हँस–मुख–सा खड़ी है।।1।।
(साल वृक्ष) विशाल और लहरा रहा है।
हाथों–हाथ नहीं पहुँचा जा सकता।
(युवती) हँसमुख लुभावना खड़ी है।
मुँह से बात भी नहीं करती।।2।।

तिते हो कागे तेबागोः
बकोः हो बईयई पे।
मोचा तेव कसः जगारा,
लिका हो ओलई पे।।3।।
बकोः दोले बईयईया,
बकोः तेव कागे तेबागोः।
लिका दोले ओलाईया,
लिका हो कएः लेलेला।।4।।

दुरंग-21

राग - जदूर
विषय - बा-नेग नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - बा-अखाड़ा कोरे।

बा-रसिका

हेला रे सरजोम बा, हेला रेम् कउ-बउ तन्
हेला रे सुड़ा संगेन् हेला रेम् एबे तोबे तन्।।1।।
चिका को मेनेगे, हेला रेम् कउ-बउ तन्
मेरे को मेनेगे, हेला रेम् एबे तोबे तन्।।2।।
टेण्डः इति नगेन गे, हेला रेम् कउ-बउ तन्
सण्डि सिम् नगेन गे, हेला रेम् एबे तोबे।।3।।
तेना कन् इलि चाटु, तेना कन् गेय
तोला कन् सण्डि सिम्, तोला कन् गेया।।4।।
चाला तपे बनोगा, तेना कन गेया
कातु तपे बनोगा, तोला कन गेया।।5।।

हाथों-हाथ पहुँचना संभव नहीं,
लकड़ी का फँदा तो बनाओ।
मुँह से भी बात नहीं करती,
(उसे) पत्र-व्यवहार तो करो।।3।।

अहा! फंदा भी बनाया जाएगा,
(तो) फंदा से भी नहीं पहुँचा-जा सकता।
पत्र भी लिखेगें तो (वह)
पत्र भी नहीं पढ़ने को।।4।।

दुरंग-21

राग	-	जदुर
विषय	-	सरहुल त्योहार के विषय में
समय	-	अगहन से बरसात तक
मुहुर्त	-	अखाड़ों पर।

आनन्द राजा सरहुल

अहा! निकट आता सरहुल! तू कैसा आने को बेताब हो!
(और) तुम लोग नई कोपलें! वसन्त ऋतु के स्वागत में कैसा उतावले हो!।।1।।

हे आनन्दमयी सरहुल पर्व! तुम किस चाहत में इतना बेतरतीब हो?
हे उगते नई कोपलें तुम किस मकसद से इतना उतावले हो?।।2।।

अहा! तुम विशुद्ध हड़ियाँ रस के लालच में ही इतना बेताब हो।
अहा! तुम मुर्गा खाने के चक्कर में ही इतना दम-खम में हो।।3।।

लेकिन हाय! हाँड़ी तो टंगा का टंगा ही रह गया।
और बँधा हुआ मुर्गा भी बँधा ही रह गया।।4।।

(शायद) छानने का छलनी नहीं है, इसलिए टंगा पड़ा है।
(शायद) मुर्गा काटने को छुली नहीं, इसलिए वह बँधा पड़ा है।।5।।

दुरंग–22

राग – जदूर
विषय – बा–नेग नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – बा–अखाड़ा कोरे।

रसिका–रानी

बा तईंग्ड़ मेगा एयग्ड़ बा तईग्ड़ में,
डालि तईंग्ड़ मेगा नपंग्ड़ डालि तईंग्ड़ में।।1।।
बा–दोरे ईग्ड़ बा मेया चिकन बा,
डालि दोरेईग्ड़ डालि मेया मेरेकन डालि।।2।।
बा तईग्ड़ मेगा एयग्ड़ सरजोम बा,
डालि तईग्ड़ मेगा नपंग्ड़ सुड़ा संगेन।।3।।
बा तईग्ड़ मेगा अयरेते ओंटञोः लेका
डालि तईग्ड़ मेगा, तयोमेते सेकोरोः लेका।।4।।

दुरंग–23

राग – जदूर
विषय – बा–नेक नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – बा–अखाड़ा कोरे।

लन्दातन बा

सरजोम बा लुपु रे गतिम् लंग्ड़ अगु रूडाईया।
सुड़ा संगेन दिली–दोंगोब रे संगम लंग्ड़ सुतुः रूडाईया।।1।।
गतिम् लंग्ड़ अगुरूडाईया, गतिम लंग्ड़ बा मोसाईया।
संगमः लंग्ड़ सुतुः रूडाईया, संगम लंग्ड़ डलि मोसाईया।।2।।

दुरंग–22

राग – जदुर
विषय – सरहुल त्योहार के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सरहुल के अखाड़ों पर।

रसिक–रानी

हे माँ! चलो मेरे खोंपा में फूल खोंस दो।
हे पिता! चलो मेरे कानों पर कोपलें फँसा दो।।1।।
हे बेटी! फूल तो खोंसूगीं (पर) कौन–सा फूल?
हे बेटी! कोपलें तो फँसा दूँगा (पर) कौन–सी डाली?।।2।।
हे माँ! सखुआ का फूल ही खोंसना।
हे पिता! सखुआ की नई कोपले ही फँसायें।।3।।
हाँ बेटी (तब) ऐसी खोंसूँगी कि आगे ही आगे उड़ता जाए।
हाँ बेटी (तब) ऐसा फँसाऊँगा कि पीछे की ओर सरकता रहे।।4।।

दुरंग–23

राग – जदुर
विषय – सरहुल त्योहार के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

हँसता फूल

सखुआ फूल के गहमा गहमी में तुम्हारा दोस्त को फिर आने का न्योता देंगे।
नई कोपलों के सरसराहट में तुम्हारी सहेली को फिर साथ लेते लाएंगें।।1।।
तुम्हारा दोस्त को आने का न्योता देंगे (और) उसे त्योहार में शामिल करेंगे।
तुम्हारी सहेली को फिर लाएंगे (और) उसे भी इस त्योहार में भागीदारी बनाएगें।।2।।

दुरंग–24

राग - जदूर
विषय - रिंगा सोमय रे
सोमय - अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

अकाल

चिमिन चिमिनेगोए रीगा लेदा
मन्दुकम् लटा तेको अड़न्दी केन्।
चिमिन चिमि नेगोए आकाल लेदा,
सरजोम् तंग्ड़े तेको कोड़न्दि केन्।।1।।

गेल बर सिरिमा गोए रिंगा लेद्,
मन्दुकम लटा तेको अड़न्दी केन्
हिसी बारे कलोमे गोए आकाल लेद्
सरजोम तंग्ड़ तेको कोड़न्दि केन्।।2।।

दुरंग–25

राग - जदूर
विषय - जी अलय-बलय रे
सोमय - अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

जी अकल–बकल

गड़ा गितिल कोदोम् सुबा रे,
तिरि-रिरि रूतु सड़िया।
हई को निनिर रेला सुबा रे,
तोरो-रोरो बनम् रूम्बुला।।1।।

दुरंग–24

राग – जदुर
विषय – अकाल के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

अकाल

अरे! किस हद तक अकाल पड़ा था?
(कि) लोग बाग महुआ का फूल खा कर शादी विवाह रचाने लगे थे।
आह! यह कितनी बड़ी बिडम्बना थी
(कि) लोग–बाग सखुए के बीज बिक्री कर ही
कन्यादान का पार लगा पाते थे।
अेर! बारह वर्ष तक अकाल पड़ा था
(कि) लोग–बाग महुआ की बीज की खिचड़ी से विवाह रचाने लगे थे।
आह! बाईस वर्ष तक सूखा पड़ा था।
(जिसमें) लोग–बाग सखुए के बीज बेचकर
कन्यादान चुकाते थे।।2।।

दुरंग–25

राग – जदुर
विषय – दुविधा मन के लिए
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

दुविधा मन

नदी के किनारे, कादम्ब के छांव में,
तरा–रा–रा बाँसुरी बज रही है।
जलाशय के समीप ताड़ वृक्ष के छांव में,
केने–केने सारंगी गूँज रहा है।।1।।

तिरि-रिरि रूतु सड़िया,
जी हो लिटिब-लिटिबा।
तोरो-रोरो बनमू् रूम्बुला,
कुड़म हो दोपोल-दोपोला।।2।।
जी हो लिटिब-लिटिबा,
सेनोः गे मीनिंग्ड़ा।
कुड़म हो दोपोल-दोपोला,
विरिद् गे सनाईग्ड़ा।।3।।
सेनोः रेदो सनोः में
सेनोः गेम कजिया।
बिरिद रेदो बिरिद् में
बिरिद् गेमू् बँकड़ाँ।।4।।
नम बड़े सेनोः जन रे,
तोवा बाईंग बा जोमा।
नम बड़ बिरिद् जन रे,
अटल बाईग्ड़ डलि जोमा।।5।।
तोवा बाईग्ड़ बा तारे,
सैं तेको लेलिंग्ड़ा।
अटल बा डलि तारे,
मोचो लेका को लांदया।।6।।

दुरंग-26

राग - जदूर
विषय - सिंगा बोंगाः नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

तरा-रा-रा बाँसुरी बज रही है,
(मेरा) मन तो ब्याकुल हो रहा है।
केने-केने सारंगी गूँज रहा है,
(मेरी) छाती तो धँक-धँक करने लगा है। ।2।।
मन तो ब्याकुल हुआ जा रहा है।
(वहाँ) जाने की तीव्र इच्छा हो रही है।
छाती धक-धक करने लगी है,
(वहाँ) पहुँचने की जी चाहता है। ।3।।
हे प्रिये! जाना है तो जाओ
जाने का ही (बार-बार) नाम लेते हो। ।4।।
पहुँचना है तो प्रस्थान कर दो,
(खुद) प्रस्थान होने का ही
(बार-बार) आभास दिलाते हो। ।5।।
(लेकिन) तुम्हारे चले जाने पर,
तोवा फूल से अपने को सजाऊँगी।
तुम्हारे वहाँ पहुँचने पर,
अटल फूल से अपने को सुसज्जित करूँगी। ।6।।

दुरंग-26

राग	-	जदुर
विषय	-	सृष्टिकर्ता के विषय में
समय	-	अगहन से बरसात तक
मुहुर्त	-	सभी मौकों पर।

सिंम बोंगा

सिरिमारे सिंग बोंगा दोरोम राजा
चिकन जोनोमे दोमृ नोमा दिंग्ड़ा
ओते रे बोसो मता बिदन सै रानी
मेरेकन लिखोने दोमृ नोला दिंग्ड़ा ।।1।।

चिकन जोनोमे होम नोमा दिंग्ड़ा
सोमय दो सेनोः तना
मेरेकन लिखोन होमृ नोला दिंग्ड़ा
नुसड़ दो बिरिद्ृ तना ।।2।।

सोमय दो सेनोः जना
जोवा दोईंग रेपो जना
नुसड़ दो बिरिद्ृ जना
देयाईंग कुबा जना ।।3।।

दुरंग–27

राग – जदूर
विषय – लिपी चेंणेः नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे ।

लिपि चेंणें

सोना लेकनृ दिसुमा लिपी ओकोरेमृ नेलादा लिपी
रूपा लेकनृ गमाया लिपी चिमै रेमृ चिनादा लिपी ।।1।।

विधाता

स्वर्ग सिंहासन पर विराजमान हे विधाता!
(तू) मुझे किस तरह का जीवन वरदान दिया?
सारी पृथ्वी पर फैली हे धरती माता!
(तू) मुझे किस तरह का भाग्य रेखा के साथ पैदा किया? ।।1।।

किस तरह का जीवन वरदान दिया,
यह जीवन तो (शनैः शनैः) बीत रहा है।
किस भाग्य को लेकर पैदा किए हो
यह भाग्य रेखा तो धीरे धीरे मिट रही है।।2।।

उम्र तो बीत रही है,
मेरा गाल भी चिपकने लगा है।
भाग्य रेखा कट रही है,
मेरा कमर भी टूटने लगा है।।3।।

तोबा फूल से (खूद को) सजाया हुआ रहूँगी,
(तो) सभी प्रेमी मुझे तीरक्षी नजर से देखेंगे।
अटल फूल से सजाया हुआ रहुँगी,
(तो) वे प्रेमी मुझ पर मुस्कुरायेंगे।।4।।

तोवा, अटल - फूल विशेष

दुरंग-27

राग	-	जदुर
विषय	-	लिपि नामक पक्षी के लिए
समय	-	अगहन से बरसात तक
मुहुर्त	-	सभी मौकों पर।

लिपि पक्षी

हे लिपी! सोने के जैसा (मूल्यवान) देश कहाँ देखे हो?
हे लिपी! चाँदी के जैसा (मूल्यवान) प्रदेश कहाँ पता किए हो? ।।1।।

सोना लेकन् दिसुमा डोंएसा रेईंग नेलादा लिपी
रूपा लेकन् रामाया लिपी कुकुड़ा रेईंग चिनादा लिपी । ।2 । ।
सोना लेकन् दिसुमा लिपी बियुर तनाया लिपी
रूपा लेकन् गमाया लिपी सेकोर तनाया लिपी । ।3 । ।
चरका लेका लिपी बियुर तनाया लिपी
कराड़े लेकाया लिपी सेकोर तनाया लिपी । ।4 । ।

दुरंग–28

राग – जदूर
विषय – गति-पिरिति ओड़ोः सोंगे नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे ।

सोंगे

दोलंग गतिंग रे ताला नगुरी ते
दोलंग संगईंग रे नेयोतम क्योंझरी ते । ।1 । ।
ताला नगुरी रे नोकोए मेनःईया
नेयोतम क्योंझरी चिमै मेनःईया । ।2 । ।
ताला नगुरी रे गतिम् मेनःईया
नेयोतम क्योंझरी रे संगम मेनःईया । ।3 । ।
गतिंग दो मेनःईया गतिम बोले ओमा लंग्ड़ा चि
संगईग दो मेनःईया संगम बोले चेदा लंग्ड़ा चि । ।4 । ।
नोमा लंग्ड़ रेयो हो बासी मण्डी गे
चेदा लंग रेयो हो बेरेल बुलंग्ड़ गे । ।5 । ।

हे लिपी! मैंने (तो) सोने के जैसा देश गोलाई में देखा है।

हे लिपी! मैंने (तो) चाँदी के जैसा प्रदेश उसके परिधि से पता किया है। ।2।।

हे लिपी! सोने का वह देश घूम रहा है।

हे लिपी! चाँदी का वह प्रदेश सरक रहा है। ।3।।

हे लिपी! वह चरखे के समान घूम रहा है।

हे लिपी! वह लट्टू के समान सरक रहा है। ।4।।

दुरंग-28

राग - जदुर

विषय - प्रीति-पाला

समय - अगहन से बरसात तक

मुहुर्त - सभी मौकों पर।

साथी

हे बन्धु! चलो चलें मध्य छोटा नागपुर को।

हे सखा! चलो चलें क्योंझर (उड़ीसा) को। ।1।।

हे भाई! मध्य छोटा नागपुर में (तेरा) कौन है?

हे बहन! क्योंझर में तेरी कौन है? । ।2।।

मध्य छोटा नागपुर में मेरा एक मित्र है।

क्योंझर में मेरी एक सहेली है। ।3।।

ठीक! तुम्हारा मित्र वहाँ है, पर वह कुछ देगा?

ठीक! तुम्हारी सहेली वहाँ है, पर वह कुछ मदद करेगी? । ।4।।

हाँ बन्धु! वह देगा तो मात्र बासी भात ही।

हे बहन! वह मदद करेगी तो मात्र कच्चा निमक से। ।5।।

दुरंग–29

राग – जदूर
विषय – बेपारी को नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – बुरू परोमाते हिजुः तन सोमय रे।

बेपारी को

बुरू आते हड़ागुन को हो सोन्दारी
नराए ते नोसोरेन को।।1।।
सेकेः सेकेः हड़ागुन को हो सोन्दारी
रोलोः रोलोः नोसोरने को।।2।।
जोजो बुटा डेरा तेकोवा हो सोन्दारी
उलि बुटा बासा तेकोवा।।3।।
निकुचिको तुला बुलुग्ड़ा हो सोन्दारी
निकुचिको गण्डा रँसूड़िं।।4।।
निकुगेको तुला बुलुग्ड़ा हो सोन्दारी
निकुगेको गण्डा रँसूड़िं।।5।।
मिदे तुला, तुला तेकोवा हो सोन्दारी
बारे गग्ड़ा, गण्डा तेकोवा।।6।।

दुरंग–30

राग – जदूर
विषय – मैनो चेंण्डें नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – खूब जेटे तन् सोमय रे।

मैनो

मैनो जी सिसि पीड़ी लो तना मैनो जी ओकोरेलंग अतिंग्ड़
मैनो जी तेलई बादी बले तना मैनो जी चिमय रेत्मंग तुसंग्ड़।।1।।

दुरंग–29

राग – जदुर
विषय – व्यापारी के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

व्यापारीगण

पहाड़ों के ढ़लान पर से उतरने वाले,
(और) तराई पर के राहों पर चलने वाले ये, व्यापारीगण।।1।।
झूमते-झूमते उतरने वाले (और)
आहिस्ते-आहिस्ते बढ़ने वाले ये, व्यापारीगण।।2।।
(गाँव आ कर) इमली वृक्ष के तले सुस्ताने वाले,
(तथा) आम की अमराई में डेरा डालने वाले, ये व्यापारीगण।।3।।
अरे भाई! क्या ये ही नमक के व्यापारी हैं?
(और) क्या ये ही लहसुन-प्याज के बिक्रेता हैं?।।4।।
अरे! ये ही एक पल्ला वाले तराजू के हैं।
(और) ये ही खेजा गण्डा लहसून वाले हैं।।5।।

गण्डा – 4 वस्तु

दुरंग–30

राग – जदुर
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – धूप काल के समय।

मैना पक्षी

हे मैना पक्षी! देखो, सिसि चरागाह जलने लगा है।
तुम कहाँ चरने जाओगे?
हे मैना देखो, तेरा तेलई मैदान भी झुलसने लगा है।
तुम कहाँ से तिनका चुनोगे?।।1।।

मैनो जी तारा तेदो लो तना तारा रेलंग्ड़ अतिंग्ड़
मैनो जी तारा तेदो बले तना तारा रेलंग्ड़ तुसंग्ड़ । ।2 । ।
मैनो जी अतिंग्ड़ अतिग्ड़ते मैनो जी लो चोटेः लेन्
मैनो जी तुसंग्ड़-तुसंग्ड़ते मैनो जी बले नन्दोड़ लेन् । ।3 । ।

दुरंग-31

राग - जदूर
विषय - सालू चेंड़ें नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे ।

साूल चेणें

होरा एदेल गोंगोर सालू दो
डारेन् कुडुम्बा बड़ेजा पिउड़ । ।1 । ।
लेयोंन् लेयोना गोंगोर सालू दो
जुकुन-जुकुन बड़ेजा पिउड़ । ।2 । ।
पिड़िंगी चेतनेरे होएवो हड़ागु लीः
चौरा लतरेरे रम्पी नोसोर लीः । ।3 । ।
चीतेम् अयुम् लीः गोंगोर सालू दो
मेरे तेम नतेन लीः बड़ेजा पिउड़ । ।4 । ।
रिचि गुगुरा रिड़िंग केन दो
बसेरा डम्बरकोम रडंग्ड़ केन् । ।5 । ।

(अरे नहीं) देखो, आधा जल रहा है।
आधे भाग पर चरने जाऊँगा।
(और हाँ) देखो कुछ भाग झुलसने लगा है।
बाकी भाग से तिनका चुन कर लाऊँगा।।2।।
आह! तुम चरते-चरते आधा जल भी गया।
हाय! तुम तिनका चुनते-चुनते आधा झुलस भी गया।।3।।
आह! तेरा चोटी का पंख जल गया।
हाय! तेरा गले का हार झुलस गया।।4।।

हार - मैना के गेल पर हार के आकार का बना पंख।
सिसि तेलई - जगह विशेष

दुरंग-31

राग - जदुर
विषय - सालू पक्षी के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - सभी मौकों पर।

सालू पक्षी

रास्ते के किनारे सेमल के चोटी पर बैठा गोंगोर सालू।
तराई पर के वट वृक्ष पर फुदकता पिउड़।।1।।
अलमस्त बैठा गोंगोर सालू (और)
देखो, डालियों को झुकाता-दिलाता पिउड़ पक्षी है।।2।।
लेकिन देखो, हवा ने उसे छत के अहाते पर ले आई है।
देखो, पिउड़ को आँधी ने चौरास्ता पर ला रखी है।।3।।
अहा! कैसे तुम पता किया गोंगोर सालू का?
किस प्रकार सुन पाया यह पिउड़ है।।4।।
अरे देखो नहीं! उसके पैर पर घूँघरू बज रहे हैं।
सुनता नहीं उसके गले पर डम्बरकोम गूँज।।5।।

गोंगोर सालू - सालू के प्रकार, डम्बरकोम - बाद्य यंत्र विशेष

दुरंग-32

राग - जदूर
विषय - तुड़कु को ओड़ोः विलायती साहेब को बोरोते
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - धरती आबाः मईनन् सोमय रे।

तुड़कु ओड़ो विलायति करेंगा को

बरगी राजा बुन्दी तुड़कु, ओकोरे मईम् नुकुकेन्
बिसौन सै लाल पगारी, चिमैरे मईम् दनंग्ड़ केन्।।1।।
अईंग दो गईंग्ड़ नुकु केनाः मरंग बुरू कुला लाता रे
अईग दो गईंग तनंग केना, हुड़िग्ड़ नरय बना लाता रे।।2।।
कचि मईनम् बोरो केद्, बुरू कुला बेंगा बंगी
कचि मईनम् चिरि केद् टोडंग बना तेपा तापी।।3।।
काचा गईग बोरो केद्, बुरू कुला ऐंगा तीय
काचा गईंग चिरि केद्, टोडंग बना नापु तीय।।4।
बुगिना मईम् उकु केन्, मएओम चेतन मएओम लिंगि लेन्
बुगि ना मईम् तनंग्ड़ केन्, बोः चेतन बोः गुली लेन्।।5।।

दुरंग-33

राग - जदूर
विषय - बा-बुरू नेग रेयः विदायी रे
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - बा-बुरू बासी।

पोरबो विदा

दोलंग्ड़ हो बुरू बासी दो, दो लंग्ड़ हो साउड़ी निरे ते
दो लंग्ड़ हो बा-मोरोए दो, दोलंग हो जरा बपल ते।।1।।।

दुरंग-32

राग - जदुर
विषय - फिरंगियों की लड़ाई
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - आजादी के वर्षगाँठों पर।

देश-विदेशी हमलावर

हे बेटी! ये बरगी नाम खूँखार राजा और बुन्दी
अफगान! तुम कहाँ छिप गई थी?और
यह घोर आततई लाल पगारी वाला किसन राय जमींदार।
तुम कैसे बच निकली? ।।1।।

हे माता (तब) मैं तो वियावान जंगल भाग कर बार्घिन के
गुफा में शरण ली थी।
हे पिता, मैं तो छोटा तराई भाग कर भालू के गुफा में जा छिपी थी।।2।।

अरे! नहीं डरी! वहाँ तो चितबरा बाघिन रहती है।
आह! कैसे साहस की! वहाँ तो बौना भालू पड़ा रहता है।।3।।

नहीं, माँ नहीं डरी, क्योंकि बाघिन तो मेरी (एक और) माँ है।
नहीं, पिता जी डरी, क्योंकि भालू तो (एक और) मेरे पिता है।।4।।

खैर! तुम वहाँ शरण ली थी, (लड़ाई में) खून के ऊपर खून बह रहा था।
खैर! तुम वहाँ जा छिपी थी, सिर के ऊपर सिर लुड़कने लगा था।।5।।

दुरंग-33

राग - जदुर
विषय - त्योहार की समाप्ती
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - सभी मौकों पर।

त्योहार की विदाई

भैंया! बुरू पर्व तो बीत गया, चलो (जंगल) खेर काटने।
भैंया! सरहूल पर्व तो चला गया, चलो (जंगल) बृंगा जलाने।।1।।

कईञः हो साउंड़ी निरे दो, कईञः हो ससागा गे
कईञः हो जरा बपल दो, कईञः हो जोजो लाद गे। ।2।।

दुरंग–34

राग – जदूर
विषय – गति–पिरिति
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

गति पिरिति

लमः जंञ गतिंग्ड़ चिरे
बुड़जु जंञ संगईग्ड़
सागिन दिसुमे रेम्
पण्डिल जन्। ।1।।
लमः जंञ गतिंग्ड़ चिरे
बुडजु जंञ संगईग्ड़
जिलिंग्ड़ गमय रेम्
चोलंग्ड़ जन्। ।2।।
सागिन दिसुमेरेम् पण्डिल जन्
ओको कोरे हो लंग्ड़ नेपेल रूड़ा।
जिलिंग्ड़ गमय रेम् चोलंग्ड़ जन्
चिमय कोरे दो लंग्ड़ चिपिना रूड़ा। ।3।।
हसा बुरू हो को बुरूई रेदो,
हसा बुरू रे लंग्ड़ नेपेल रूड़ा।
बमानी यात्रा हो को यात्राए रेदो,
बमानी यात्रा रे लंग्ड़ चिपिना रूड़ा। ।4।।
हसा बुरू रेलंग्ड़ नेपेल रूड़ा
तीरे मुदंमे लंग्ड़ नोपोम रूड़ा।
बमानी यात्रा रेलंग्ड़ चिपिना रूड़ा
होको रे काडे माला लंग्ड़ चेपेद रूड़ा। ।5।।

हे भाई! मैं तो खेर काटने नहीं जाऊँगा क्योंकि वह काँटेदार है।
हे भाई! मैं तो बृंगा जलाने भी नहीं जाऊँगा
क्योंकि काली लग जाएगी। ।2।।

खेर - लम्बी घास, बृंगा - कूप काटना या जलाना, बुरू पर्व - पर्व विशेष

दुरंग-34

राग - जदुर
विषय - प्रीति-पाला
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - सभी मौकों पर।

प्रीति पाला

गोरार और कोहिनूर बीज के समतुल्य हे प्रिये!
तुम सुदूर देशों में (विवाहित होकर) चली गयी।।1।।
गोरार और कोहिनूर बीज के समतुल्य हे प्रेमी।
तुम विशाल फैले क्षेत्र में (कहीं) खो गए।।2।।
हे प्रिये! तुम सुदूर देशों में चली गई, हम (अब) कहाँ एक दूसरे को देख पाएँगे?
हे नाथ! तुम विशाल क्षेत्र में कहीं खो गए
(अब) हमारी कहाँ भेंट-मुलाकात होगी?।।3।।
हे प्रिये! यदि हसा गाँव का बुरू पर्व होगा तो हम वहाँ एक दूसरे को मिलेगें।
हे नाथ! बमानी गाँव का यात्रा लगे तो हम
वहाँ भेंट-मुलाकात करेंगे।।4।।
हे प्रिये! यदि उस मेले में हमारी भेंट हो तो हाथ की अंगूठी को अदला-बदली करेंगे।
हे नाथ! यदि उस यात्रा में एक दूसरे को
पहचान पाए तो गले का हार को अदला-बदली करेंगे।।5।।

गोरार तथा कोहिनूर के बीज - पक कर सूख जाने पर स्वतः फट जाते हैं और बीज इधर-उधर छिटक जाती हैं।

दुरंग–35

राग – जदूर
विषय – दिसुम–जंजाल
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

दिसुम जंजाल

ससंग्ड़ हातु हाले ससंग्ड़ हातु हो
बिराड़ा नगोर हाले बिराड़ा नगोर।।1।।
ससंग्ड़ हातु हाले ससंग्ड़ हातु
ससंग्ड़ हातु रेको मपः तन्।।2।।
विराड़ा नागोर हाले विराड़ा नगोर
विराड़ा नगोर रेको तुपुईग्ड़।।3।।
ससंग्ड़ हातु रेको मपः तन्
मुरूद बा कापी तेको मपः तन्।।4।।
विराड़ा नगोर रेको तुपुईग्ड़ तन्
हेसः बा सार तेको तुपुईग्ड़ तन्।।5।।
मुरूद बा कापी तेको मपः तन्
हागा–हागा हो को मपः तन्।।6।।
हेसः बा सार तेको तुपुईग्ड़ तन्
कूमा गेड़े होको तुपुईग्ड़।।7।।
हागा–हागा हो को मपः तन्
तोवा लेकन् दिसुमे दो मयोम् जन्।।8।।
कूमा–गेड़े हो को तुपुईग्ड़ तन्
दई लेकन् गमय दो मैला जन्।।9।।

दुरंग-35

राग - जदुर
विषय - हल्दी घाटी की लड़ाई
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - सभी मौकों पर।

हल्दी घाटी की लड़ाई

हाय! क्या हाल, हल्दी घाटी की कहो
या विराट नगर.... ।।1।।
हल्दी घाटी कहो तो,
वहाँ घोर मार-काट मचा हुआ है।।2।।
(और) फिर विराट नगर आओ तो,
वहाँ तीर पर तीर हवा में छोड़े जा रहे हैं।।3।।
हल्दी घाटी में मार काट हो रहा है,
पलास के फूल सरीखे बलुवे ले-लेकर हो रहा है।।4।।
विराट नगर में तीरों की वर्षा हो रही है,
पीपल की कलियों जैसे तीर वर्षा कर रही हैं।।5।।
आह! पलास के फूल सरीखे बलुवा से आत्मसंहार हो रहा है,
भाई और भाई के बीच लड़ाई चल रही हैं।।6।।
पीपल की कलियों सरीखे तीर बरस रही हैं,
मामा और भगीना के बीच तीर चल रहीं हैं।।7।।
भाई-भाई के बींच मार काट हो रहा है,
दूध जैसा सफेद (शान्ति प्रिय) देश खून से लाल हो गया।।8।।
मामा-भगीना के बीच तीर चल रहे हैं,
दही जैसा स्वच्छ (सोना उगलने वाला) धरती बंजर बन गई।।9।।

पलास के फूल के बीच तलवार के आकार का पराग रहता है यहाँ उसे ही तलवार माना गया है। ठीक उसी तरह पीपल की कली तीर जैसा दीखती है। यहाँ उन्हें तीर माना गया है।

दुरंग–36

राग – जदूर
विषय – सेनोः तन सोमय नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

सेनोः तन सोमय

हिजुः सेनोः ओगोईग्ड़ लेले मेया,
गोसो–2 ओगोईग्ड़ लेले मेया।।1।।
बिउर–नचु रे गोईग्ड़ चिना मेया,
मोरो–सी मैला गोईग्ड़ चिना मेया।।2।।
नोते लोलो तिचि, सिरिमा जेटे,
गोसो–गोसो गोईग्ड़ लेले मेया।।3।।
नोते लोलो तिचि सिरिमा जेटे,
मोरो–सी मैला गोईग्ड़ चिना मेया।।4।।
जेटे लोलो तेयो कगे सिरिमा जेटे तेयो कगे,
सोमय सेनोः तना गतिड़ नुसड़ बिरिड तना।।5।।

दुरंग–37

राग – जदूर
विषय – सेनोः तन सोमय नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे।

अईऊः सोमय तैकेन रे

नईअः गा सोमय बोले तईं केन रेदो,
तीरे मुदंम् तईं दो रिगिमिगि।
नईअः गा नुसड़ बोले तईं केन् रेदो,
कटा रे पोला तईं दो सिकाए–सोंकोए।।1।।

दुरंग–36

राग – जदुर
विषय – ढलती उम्र की चिंता में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

ढलती उम्र

मैं, दिन प्रतिदिन आता-जाता तुम्हें देखता हूँ।
(पर) किसी चिंता में खोए-खोए देखता हूँ।।1।।
मैं आगे पीछे, मुड़-मुड़ कर तुम्हें पहचानने की कोशिश करता हूँ।
(पर) उत्साहहीन नजर आते हो।।2।।
क्या?धरती की तपिश या प्रचण्ड धूप से
तुम्हें चिंताग्रस्त देखता हूँ।
आह! क्या धरती की तपिश या धूप से
तुम उत्साहहीन नजर आते हो।।3।।
हे मित्र! धरती की तपिश भी नहीं सूरज की धूप भी नहीं।
लेकिन, मेरी जो उम्र ढलने लगी है, समय शनैः शनै बीत रहा है,
इसी दुष्चिंता में डूबा हूँ।।5।।

दुरंग–37

राग – जदुर
विषय – उम्र दराज के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

जब मैं समय की बुलन्दी पर थी

जब मैं समय की बुलन्दी पर थी,
(तब) उँगलियों (हाथ) पर (छल्ला) चकमक करने लगे थे।
जब मैं जवानी के दहलीज पर थी,
तब, उँगलियों (पैर) पर पोला छम-छमक करने लगे थे।।1।।

तीरे मुदंम तईंदो रिगिमिगि,
मयग्ड़ लतरे रे पड़िया पचोन् ।
कटा रे पोला तईंदो सिकाए-सोकोए,
निरे-सेने गतिंग्ड़ नचल-डाड़ी । ।2 । ।

सोमय गतिंग्ड़ दोरे सेनोः जन्,
पड़िया पचोन दोरे केचः जन् ।
नुसड़ संगईग्ड़ दोरे बिदिद् जन्
नचल डाड़ी दागे नजेंद जन् । ।3 । ।

पड़िया पचोन दोरे केचः जन्
सोमय-सोंगति होए बुड़िया जन् ।
नचल डाड़ी दागे नजेंद जन्,
दिसुम-दगड़ा होए हड़म जन् । ।4 । ।

दुरंग-38

राग	-	जदूर
विषय	-	अकाल-गोनोए नगेन
सोमय	-	अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त	-	सोबेन सोमय कोरे ।

मरंग अकाल

अंग्ड़ नम् रेंगे चीरे गितिः नम् गोनोए,
चिमिन-चिमिने गोईग्ड़ चौली जंग्ड़ा ।
अंग्ड़ नम् रेंगेः चीरे गितिः नम् गोनोए,
चिमिन-चिमिन गोईग्ड़ कुदी जंग्ड़ । ।1 । ।

चिमिन-चिमिने गोईग्ड़ चौली जंग्ड़ा,
गिण्डि मेरो मेको चबा जन् ।
चिमिन-चिमिने गाईग्ड़ कुदी जंग्ड़ा
सिमे सुकुरिको टुण्डु जन । ।2 । ।

उँगलियाँ पर छल्ला चकमक करने लगे थे
(और) कमर पर पचोन लहराने लगा था।
पैर पर पोला छम-छमक करने लगे थे,
(तब) नचल डाड़ी पानी लाने जाया करती थी।।2।।

हाय! जब समय जाता रहा,
पाड़ वाला पाचोन भी फट-सा गया।
आह! उम्र ढलने लगी,
तो, नचल डाड़ी का पानी भी सूख गया।।3।।

पाड़ वाला पाचोन फट-सा गया,
समय-रूपी संगी बुढ़िया गयी।
नचल डाड़ी का पानी सूख गया,
देश-रूपी धाँगर बुढ़ा गया।।4।।

पोला - पैर की उँगलियाँ पर पहना जाने वाला छल्ला।, डाड़ी - चुआ।

दुरंग-38

राग - जदुर
विषय - अकाल के समय
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - सभी मौकों पर।

महाकाल

दिन प्रतिदिन की गरीबी कहो या सुप्तावस्था का मरण,
(मैं) कितना और कब तक इसकी चिंता में रहूँ।।1।।

दिन प्रतिदिन का दुख-झंनझट कहो या जीवन भर का दुख-जंजाल,
कितनी बार सोखा के द्वार का दौड़ लगाऊँ?।।2।।

ओह! कब तक इन सब की चिंता में जलूँ,
घर के सभी भेड़ बकरियाँ (बेच खा कर) खत्म हो गईं।।3।।

हाय! कितना बार सोखा ओझाओं के पास दौड़ लगाऊँ,
घर की सभी मुर्गी-चेंगना समाप्त हो गयीं।।4।।

दुरंग-39

राग - जदूर
विषय - कुड़ि सेनः खींस नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

कुड़ि होनः खींसी

ने कलोम् कपे गोग्ड़ि रे, बाबा लेका बन्दी तईंग पे।
ने कलोम् कपे चलःईग रे, सारू लेका रिपा तईग पे।।1।।
बाबा लेका बन्दी तईंग पे, अदिंग रे दो तईंग पे।
सारू लेका रिपा तईंग पे, मुतुल रे हका तईंग पे।।2।।
नईंग नेल को हिजुः रे, बन्दी बाबा नुदुबा कोपे।
नईंग चिना को सेटेर रे, सारूरिपा चुण्डुला कोपे।।3।।

चिटिद

दुरंग-40

राग - चिटिद
विषय - पिरिति नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - सोबेन सोमय कोरे।

बपागे

गड़ा तेलंग्ड़ कोटोंग्ड़ कना,
बुरू तेलंग्ड़ दनंग्ड़ कना
गतिंग्ड़ रे हेसः सकम चिटि कूलेमे।।1।।
सिंगी दोरेंग्ड़ दाड़ाँ मेया,
निदा दोरेंग्ड़ कुमु मेया,
गतिग्ड़ रे होने रेदोईग्ड़ हेबे बेड़ा में।।2।।

दुरंग–39

राग – जदुर
विषय – कान्या का क्रोध
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

कन्या का क्रोध

हे माता जी! इस साल भी मेरी शादी न कराओ तो
धान के मोरा जैसा मुझे भी छिपा कर रख दो।
हे पिता जी! इस साल मेरा संसार नहीं बसा देते तो,
पेचकी की तरह मुझे भी पुआल में छिपा कर रखो।।1।।

तुम (मुझे) धान के मोरा जैसा छिपा कर रख दो।
(और) हाँ, मुझे घर के भीतर ही छिपा दो।
पेंचकी के समान पुआल में छिपा रखो।
(और) हाँ, मुझे बाली के ऊपर टाँग कर रखो।।2।।

(और) यदि (इस बीच) मुझे देखने कोई आये तो
(उसी) धान के मोरा को दिखा दो।
(फिर इसी दरम्यान) यदि कोई मेरे रिश्ते के लिए आए
तो वही पेचकी के पोटली की ओर इशारा कर दो।।3।।

दुरंग–40

राग – चिटिद
विषय – प्रीत-पाला
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – सभी मौकों पर।

विरह में

हे प्रिये! हमारे बीच यह विशाल चौड़ी नदी जो फैली है।
हमारे बीच ये लम्बी पर्वत मालाएँ जो खड़ी हैं।
पर, इससे क्या फर्क पड़ने वाला! तुम पीपल के पत्ते पर मुझे पत्र लिखा करो।।1।।
हे जिगर के टुकड़े! दिन को मैं तुझे चारों दिशाओं में खोजता-फिरता हूँ।
रात में तुझे सपने में देखा करता हूँ।
हाय! यदि तुम कोई शिशु होती तो गोदी में लिये फिरता।।2।।

ओर- जदुर

दुरंग-41

राग - ओर जदुर
विषय - टुअर होनः नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

टुअर होन

सेरेंग्ड़ चेतन-चेतन् ते दो नमें चिमई सेने लेद्।
नरय ऱ्गड़ी लतर-लतर तेदो नमें चिमई टुण्डांण्ड केन्।।1।।
नईं गेचा सेने लेद् एगाईये कोईंग्ड़ दाँड़ा केन्।
नईं गेचा, टुण्डाग केन् नपुईये कोईग्ड़ खोजर केन्।।2।।
कमें मईना नमें कोवा दिरि तेको तेनेन् जन्।
कमें मईना चिना कोवा जनुम तेको रमेन जन्।।3।।

दुरंग-42

राग - ओर जदुर
विषय - बा नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

बा

सेयाड़ी सेयाड़ी सेयाड़ी, सेयाड़ी रे नन्दी बा दो
सेयाड़ी रे नुन्दी बा।।1।।
बकैनी बकैनी बकैनी, बकैनी रे बंगुर बा दो
बकैनी रे बगुर बा।।2।।
सेयाड़ी रे नन्दी बा, ओकोए मईना पेटेः केद्
ओकोए मईना पेटेः केद्।।3।।

दुरंग–41

राग - ओर जदुर
विषय - अनाथ बच्चे के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

अनाथ बच्ची

ऐ बच्ची! इस चट्टान के ऊपर से क्या तुम ही गुजरी थी?
(और) इस बलुआई ढलान पर से क्या तुम ही सफर की थी?
हाँ हाँ, उसके ऊपर से मैं ही गुजरी थी, स्व. माता की खोज में।
हाँ हाँ, मैं ही उस ढलान पर से सफर की थी,स्व. पिता की खोज में।
हे अबोध बालिका! तुम उसे नहीं पा सकती।
(क्योंकि) वह तो इस विशाल चट्टान से दबी पड़ी है।
हे नन्ही बालिका! उसे तुम नहीं पा सकती।
(क्योंकि) वह तो इन जंजाल काटों के बीच छिप गया है।

दुरंग–42

राग - ओर जदुर
विषय - फूल के बारे में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

फूल

अहा! देखो तो, लतायुक्त सेयाड़ी और हुन्दी एक में
कैसे लटपटाये हुए हैं।।1।।
और उनके अल्हड़ हँसते
फूल कैसा सुन्दर दिख रहे हैं।।2।।
और इधर देखो, बकैनी तथा बाबुल जो कि एक ही
जगह खड़े हैं उनके फूल कैसे लहरा-इठला रहे हैं।।3।।
हाय! ये सेयाड़ी और हुन्दी फूल किसने
तोड़ डाला, तुमने देखा है बेटी?।।4।।

बकैनी रे नीरे बंगुर बा, चिमय मईना चाँगड़ा केद्
चिमय मईना चाँगड़ा केद् ।।4।।
सेन्देरा को जिलिब-2, सेन्देरा को पेटः केद्
सेन्देरा को पेटः केद् ।।5।।
करेंगा को जोलोब-2, करेंगा को चाँगड़ा केद्
करेंगा को चाँगड़ा केद् ।।6।।
सेन्देरा को पेटः केद्, चुटि रेको पेटेः केद्
चुटि रेको पेटेः केद् ।।7।।
करेंगा को चोगड़ा केद्, सुबा रेको चँगड़ा केद्
सुबा रेको चंगड़ा केद् ।।8।।

दुरंग-43

राग - ओर जदुर
विषय - बिर-सेंगेल नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

बिर सेंगेल

कुउ.उ...उ... काड़े गोड़ा रटा-रटा कुउ.उ...उ... लो तन्
कुउ.उ...उ... लो तन् ।।1।।
कुउ.उ...उ... लुपुः तियम् चिटी-पिटी कुउ.उ...उ... बले तन्
कुउ.उ...उ... बले तन् ।।2।।
कुउ.उ...उ... ओकोए गे ओण्डोर केद् कुउ.उ...उ... लो तन्
कुउ.उ...उ... बले तन् ।।4।।
कुउ.उ...उ... दासी कोड़ा ओण्डोर केद् कुउ.उ...उ... बले तन्
कुउ.उ...उ... लो तन् ।।5।।
कुउ.उ...उ... कमड़ी कुड़ी जुण्डी केद् कुउ.उ...उ... बले तन्
कुउ.उ...उ... बले तन् ।।6।।

ओह! ये बकैनी और बाबुल के हँसते फूल
किसने मसल डाला, तुमने पहचाना है बेटी? ।।5।।
हाँ-हाँ देखा है माँ, देखो शिकारीगण जा रहे हैं
उन्होंने ही ये फूल तोड़ डाला है। ।6।।
और देखो, होलोए जा रही हैं, उन्होंने ही ये फूल
मसल डाला है।।7।।
आह! शिकारीगण ने तोड़ डाला,
मूल धड़ को ही तोड़ डाला।
ओह! होलोएगण ने मसल डाला,
समूल ही मसल डाला।।8।।

दुरंग-43

राग - ओर जदुर
विषय - दवानल के बारे में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

दवानल

जा.....जा...जा.... काड़े घास से भरा पड़ा टाँड़
धूँ....धूँ.....धूँ.... कर जल रहा है, जा.....जा...जा....।।1।।
जा.....जा...जा.... तियम घास से अटा पड़ा ढलान
चर....चरा.... कर खाक हुआ जा रहा है, जा.....जा...जा....।।2।।
जा.....जा...जा....किसने आग लगाया
धूँ....धूँ.... कर जल रहा है जा.....जा...जा....।।3।।
जा.....जा...जा.... कौन चिंगारी लगा रहा है
चर...चर.... खाक हुआ जा रहै, जा.....जा...जा.....।।4।।
जा.....जा.....जा.... (कोई) धांगर ने आग लगाया होगा,
धूँ....धूँ.... कर जल रहा है, जा.....जा.....जा....
जा.....जा.....जा.... (कोई) दासी ने चिंगारी लगा रही होगी
चर....चर..... खाक हुआ जा रहा है, जा.....जा.....जा....।।6।।

दुरंग–44

राग – ओर जदुर
विषय – गाड़ी–सरः किंग नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे।

हे गाड़ी

बुरू दः दो सेकेः सेकेः
चिया गड़ीम् नुआना चिः–2
नराय दः दो रोलोः रोलोः
चिया सरःम् जेम्बेद ना चिः–2।।1।।
कगे चोवाईंग नुआना
बुरू लिंडुग्ड़ अतु तन्–2
कगे चोवाईंग चेम्बेदाना
बेड़ा मरमर बुल तन–2।।2।।

दुरंग–45

राग – ओर जदुर
विषय – जो–बा नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे।

मनी अड़ाः

बुरू रे–बुरू रे मनी दो,
बेड़ा रे–बेड़ा रे राई।।1।।
लिमंग्ड़–लोमेंग्ड़ा मनी दो
तिंजर–तोंजोरा राई।।2।।
सिदे लेगे मोनिंग्ड़ा मनी दो
टोटः लेगे सनाईंग्ड़ा राई।।3।।

दुरंग–44

राग – ओर जदुर
विषय – बन्दरों के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

हे बन्दर!

कल-कल करता स्वच्छ पहाड़ी नाले का पानी,
हे बन्दर तुमने क्या इसका स्वाद चखा है या नहीं?
तराई पर बहता निर्मल पानी,
हे बन्दर तुमने इससे प्यास बुझाया है या नहीं?
तराई पर बहता निर्मल पानी, हे वानर, तुमने क्या
प्यास शान्त किया है?अथवा नहीं?
हे मानुष! मैंने उसे नकार दिया है क्योंकि
उस पर एक पहाड़ी कीड़ा बह रहा था।
हे मानुष! मैंने उसे नहीं पिया है क्योंकि
उसमें तराई वाला बिच्छु तैर रहा था।

दुरंग–45

राग – ओर जदुर
विषय – सरसों फसल के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

लहलहाता सरसों

अहा! पहाड़ पर का सरसों तो देखो!
फिर उधर, तराई की ओर निहारो, वहाँ
भी राई की सफल लगायी गयी है।।1।।
कोमल, अति कोमल है सरसों के लहलहाते पौधे
और नाजुक, बिलकुल नाजुक हैं राई के शर्मातें कोपलें।।2।।
हाय रे! तोड़ लेने का मन करता है, सरसों का साग
हाय रे! मन काट लाने को चाहता है राई।।3।।

अलो कुड़िकिंग सिदेय मनी दो
अलो कोड़ाकिंग्ड़ टोटःय राई । ।4 । ।
तीरे मुंदम गोनोंग्ड़ तेया मनी दो
कटा रे पोला सतीते राई । ।5 । ।

दुरंग-46

राग - ओर जदुर
विषय - चेण्ड़ें को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

किकिर चेणें

गड़ा किकिर गोले-गोलेय
नाईजा पुतमू रियाड़-रोएओड़ । ।1 । ।
बिर बुरू रे चि टिकुरा रे
गोले-गोलेय । ।2 । ।
गड़ा रे चि जोबेला रे
रियाड़ा-रोएओड़ । ।3 । ।

दुरंग-47

राग - ओर जदुर
विषय - जोजोः निः
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

जोजोः निः

नेगम रचा नपुम रचा,
उली सकम उरूड़ लेनू ।

हे लड़की! सरसों का साग मत तोड़ना।
हे लड़का! राई के पौधे को मत काट डालना।।4।।
क्योंकि सोने के दाम सरसों का भाव है।
और चाँदी के दाम राई का भाव है।।5।।

दुरंग-46

राग - ओर जदुर
विषय - पक्षी के बारे में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

किंग फिसर

सुनो सुनो! नदी के इधर-उधर किंग फिसर
कैसा सिसकारी मारता फिर रहा है?
और तराई के चारों ओर यह पाँड़की
कैसा गुटरू-गुँ करता रहता है?।।1।।
अहा! पहाड़ के ऊपर या कहीं टीले पर
यह सिसकारी मार रहा है।।2।।
ओह! नदी के किनारे किनारे या दल-दल पर
यह पाँड़की कैसा गुटरू-गुँ करता रहता है?

दुरंग-47

राग - ओर जदुर
विषय - झाड़ु देने वाली के विषय पर
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

झाड़ुदारिन

तुम्हारे माँ-बाप घर के अहाते,
आम के पत्तों से भर गया है।

नेगम रचा नपुम रचा,
जोजो समक गसर लेना।।1।।
मरे मईना जोजोगे में
उली समक दुरूड़ लेन।
मरे मईना टापा लेमें
जोजो सकम गसर लेन।।2।।

दुरंग-48

राग - ओर जदुर
विषय - बा को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

बोंगा बा-राजा बा

सिंगी तुरोः होरा रे दो, बोंगा बा दोगा नेयग्ड़ बोंगा बा।
चण्डुः मुलुः डारेन रे दो, राजा बा दोगा, नपग्ड़ राजा बा।।1।।
ओकोए गेचा रोवा लेद्, बोंगा बा दोगा नेयग्ड़ बोंगा बा।
चिमय गेचा पोवा लेद्, राजा बा दोगा नपग्ड़ राजा बा।।2।।
डिण्डा कुड़ी रोवा लेद्, बोंगा दोगा नेयग्ड़ बोंगा बा।
डंगुआ कोड़ा पोवा लेद्, राजा बा दोगा नपग्ड़ राजा बा।।3।।
जुड़ी-जड़ी बुटा तेय, बोंगा बा दोगा नेयग्ड़ बोंगा बा।
जोता जोता गँड़ा तेय, राजा बा दोगा नपग्ड़ राजा बा।।4।।

और इमली के पत्ते भी हैं।।1।।

हे लड़की! चल इन सूखे पत्तों को
झाड़ु से साफ कर देना
और उन इमली के पत्तें को
भी बुहार देना।।2।।

दुरंग-48

राग - ओर जदुर
विषय - फूलों के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

बोंगा फूल राजा फूल

सूरज मुखी राह पर,
हे माँ, बोंगा फूल कैसा सुन्दर लग रहा है?
चन्द्रमुखी पगडन्डी पर,
हे पिता जी, राजा फूल कैसा हँस रहा है?।।1।।

हे माँ, यह फूल,
किसने रोपा था?
हे पिता जी, यह राजा फूल का चारा
किसने लगवाया था?।।2।।

हे बेटी, एक कुँवारी लड़की ने यह फूल रोपा था।
हे पुत्री, एक कुँवारा लड़का ने यह चारा लगवाया था।।3।।

अहा! जोड़ा-जोड़ी कैसा सुन्दर इसके धड़ हैं?
अहा! गुच्छेदार मजबूत कैसे राजा फूल के डालियाँ हैं?

मागे

दुरंग–49

राग - माँगे
विषय - बा को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

लन्दातन बा

बा–लिसिलिसिया–2
बेंगड़ा बकड़ी बा लिसि लिसि...ई...ई...ई।
बा–नुराय बराया–2
गड़ा कुदा बा दो, बा–नुराय बरायाए...ए....ए...ए।।1।।
बा लेगे मोनिंग्ड़–2
बेंगड़ा बकड़ी बा–लिसि लिसिया...ई...ई...ई।
डलि लेगे सनईग्ड़ा–2
गड़ा कुदा बा दो बा नुराय बराय ए...ए....ए।।2।।,

दुरंग–50

राग - माँगे
विषय - दुकु–जंजाल रे
सोमय - अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

गामा दः

नोकोरे लिपि रे लिपि नोड़ः, लंग्ड़ दो लिपि नोड़।
चिमय रे लिपि रे लिपि रोसोम् लंग्ड़ दो लिपि रोसोम् लंग्ड़।।1।।
नैला गड़ा रे लिपि नोड़ः लंग्ड़ दो लिपि नोडः लंग्ड़।
डेलका बुडु रे लिपि रोसोम् लंग्ड दा लिपि रोसोम लंग्ड़।।2।।

दुरंग–49

राग – मागे
विषय – फूल के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

हँसता फूल

अहा! आँगना के क्यारी में फल हँस रहे हैं।
सखी, फूल कैसे हँस रहे हैं?।।1।।
अहा! फूल के गुच्छे झुल रहे हैं,
सखी, नदी के किनारे जामुन के फूल झुल रहे हैं।।2।।
अहा! फूल खोंपा में खोंसने का मन करता है।
अहा! क्यारी में फूल झुल रहे हैं।।3।।
गूँथने को मन मचल रहा है,
सखी, जामुन के फूल झुल रहे हैं।।4।।

दुरंग–50

राग – मागे
विषय – वृष्टि के बारे में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

वर्षा

हे लिपि चिड़ियाँ! तुम्हारा गाँव-घर कहाँ है?
हे लिपि चिड़ियाँ! तुम्हारा वासा किस मुलुक में है?
हे बन्धु! मेरा घर-द्वार तो जोते हुए खेत के गड्ढों में है।
हे दोस्त! मेरा बासा तो खेत के ढेले के ऊपर है।।2।।

चेतन रिम्बिल दो लिपि गुले-गुले, लिपि गुले-गुले।
लतर लारी दो लिपि नलय-बलय लिपि नलय-बलय।।3।।
गमय-गमय दो लिपि, गुले-गुले लिपि गुले-गुले।
रम्पि रम्पि दो लिपि गुले-गुले लिपि गुले-गुल।।4।।
नैला गड़ा दो लिपि पेरेः जन्, लिपि पेरेः जन्।
डेलका बुडु दो लिपि लेयग्ड़ जन् लिपि लेयग्ड़ जन्।।5।।
होने लंग्ड़ को रबग्ड़ तन् लिपि रबग्ड़ तन्।
गँडा लग्ड़को लिपि रेयाड़ तन् लिपि रेयाड़ तन्।।6।।

दुरंग-51

राग - माँगे
विषय - होएवो दुदुगर नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

होएवो दुदुगर

नोको बुरूए होएवो लेदा
सिंजु सकम नोटोग्ड़े लेना।
चिमै बेड़ा रम्पि लेद्,
मदे बुरम दोपली लेना।।1।।
सिंजु बुरूए होएवो लेदा
सिंजु सकम नोटाग्ड़े लेना।
मदे बेड़ाए रम्पि लेद।
मदे बुरम दोपली लेना।।2।।

हे लिपि चिड़ियाँ, देखो आकाशा में काले बादल घिरने लगे हैं।
हे लिपि चिड़ियाँ, आवारे बादल तो उतावले में उमड़-घुमड़ रहे हैं। ।3।।
हे लिपि चिड़ियाँ आज तो मुसलाधार वर्षा होगी।
हे लिपि चिड़ियाँ आज तो आँधी-तुफान आने वाली है। ।4।।
हे लिपि चिड़ियाँ वह जोताई वाला खेत तो डूब जायेगा।
हे लिपि चिड़ियाँ वह खेत का ढेला तो गल जायेगा। ।5।।
हे लिपि चिड़ियाँ तुम्हारे बाल-बच्चे ठंडे के मारे ठिठुरने लगे हैं।
हे लिपि चिड़ियाँ तुम्हारा परिवार तो ठंड से जमने लगा है। ।6।।

लिपि चिड़िया - एक पक्षी विशेष है जो आकाश में बहुत ऊँचाई तक उड़ सकता है।

दुरंग-51

राग - मागे
विषय - हवा के झोके के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

हवा का झोंका

ओह! किस दिशा से हवा का झोंका गया कि
पहाड़ पर का बेल पत्ता डोल गयी थी।
भला! किधर की तूफान आ धमकी कि
तराई पर का बाँस की सूखी पत्ती उड़ गयी। ।1।।
बेल पहाड़, की दिशा से हवा का झोंका आया कि
पहाड़ पर का बेल पत्ता डोल गयी थी।
बाँस वाली तराई, की तूफान आयी कि
सूखे बाँस की पत्ती उड़ गयी। ।2।।

दुरंग-52

राग - माँगे
विषय - कुला-बिंग नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

कुला-बिंग

बेंगड़ा-बकड़ी मरची-बकड़ी,
कुला ना कुलाए हग्डे-हग्ड़ा-2, हैरी..ई...ई..।
बेंगड़ा-बकड़ी मरची-बकड़ी
बिंग ना बिंग सो-सोंवाँ-2, हैरी..ई...ई..।।1।।

ओकोए गे हुआः कियः
कुला ना कुलाए हग्डे-हग्ड़ा-2, हैरी..ई...ई..।
चिमै गे सोदोर कियः
बिंग ना बिंग सों-सोंबा-2, हैरी..ई...ई..।।2।।

दासी कोड़ाए हुआः किया,
कुला ना कुलाए हंग्ड़-हंग्ड़ा-2, हैरी..ई...ई..।
कमड़ी कुडिः सोदोर कियः
बिंग ना बिंग सों-सोंवा-2, हैरी..ई...ई..।।3।।

दुरंग-53

राग - माँगे
विषय - दः गमा तनरे
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

जड़म-जड़म दः जामाः

सिसिकाए बिरे रे सिसिकाए गमय
दो सिसिकाए गमय, हैरी...ई...ई...हा।
जाम-जमको बेड़ा रे जाम-जमको रम्पिया
दो जाम-जमको रम्पिया, हैरी...ई...ई...हा।।1।।

दुरंग–52

राग – मागे
विषय – जानवरों के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

नाग और बाघ

हाय क्या जमाना! बैगन की क्यारी बोलो या
मिर्च की क्यारी, देखो बाघ दहाड़ रहा है।
बैगन की क्यारी बोलो या
मिर्च की क्यारी देखो, नाग सों-सों कर रहा है।।1।।

हाय! किसे उठा ले गया
बाघ दहाड़ रहा है।
ओह! किसे डँस दिया है नाग
सों-सों कर रहा है।

दुरंग–53

राग – मागे
विषय – रिम-झिम वर्षा के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

रिम-झिम बारिश

सिसिको, जंगल में, सिसिको वर्षा हो रही है।
हाय रे वर्षा हो रही है.....
जाम जमको, तराई में, जाम जमको, बुहार हो रही है।
हाय रे बुहार हो रही है.....।।1।।

सिसिकाए गमया नोकोरे लंग्ड़ सुरू ना,
नोको रे लंग्ड़ सुरू ना...हैरी...ई...ई...हा।
जाम-जमाकेए रम्पिया चिमै रे लंग्ड़ दनंग्ड़न
चिमै रे लंग्ड़ दनग्ड़न हैरी...ई...ई...हा। ।2।।

नेगम रचा तुँड़सी-तुँसड़ी रे लंग्ड़ सुरूना
दो तुँड़सी रे लंग्ड़ सुरूना हैरी...ई...ई...हा।
नपुम रचा बरंगु-बरंगु रे लंग्ड़ दनंग्ड़ेन
दो बरंगु रे लंग्ड़ दनंग्ड़ेन हैरी...ई...ई...हा। ।3।।

तुँड़सी रे लंग्ड़ सुरूना तुँड़सी ओ जोजोरो
तुँड़सीओ जोजोरो...हैरी...ई...ई...हा।
बरंगु रे लंग्ड़ दनाग्ड़े बरंगुओ लिर्लिगिं
दो बरंगुओ लिलिंगि हैरी...ई...ई...हा। ।4।।

दुरंग-54

राग - माँगे
विषय - अकाल नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

रेंगेः

सेगो-मेगो दिसमे चि सेगो मेगो गमय
रेंगेयः ज बरेंग रेंगेयः....अ....अ...अ....।
सेगो-मेगो दिसमे चि सेगो-मेगो गमय,
तेतंग्ड़ ज बरेंग तेतंग्ड़ा...अ....अ...अ....।

सिसिको वर्षा हो रही है। सिसिको हम कहाँ बचें?
हाय रे हम कहाँ बचे...?
जामको बुहार हो रही है जमको हम कहाँ शरण लें?
दईया रे हम कहाँ शरण लें....? ।।2।।

तेरी माँ के आँगन पर तुलसी का पौधा है
चलो, हम वहाँ जा कर जा छिपे
चलो चलो वहाँ जा कर जा छिपे....
पिता के आँगन पर बाबुल का वृक्ष है
दौड़ो वहाँ हम जा कर शरण ले
दौड़ो-दौड़ो वहाँ जा कर शरण ले..... ।।3।।

बे-शक हम तुलसी के नीचे जाये, पर
वहाँ तो चूता है, कैसे बचें?
हाय रे कैसे बचें?
बे-शक हम बाबुल के नीचे छिपेंगे पर
वहाँ तो बाढ़ आने वाली है
हम वहाँ जायेंगे।
दईया रे दईया कहाँ जायेंगे....।

दुरंग-54

राग - मागे
विषय - गरीबी के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

गरीबी

इस कपटी दुनिया में तथा अशान्त संसार में,
सर्वत्र भूखमरी ही भूखमरी फैली हुई है।
इस छल-कपट की दुनिया में तथा अप्रिय संसार में
हर ओर प्यासे गले ही भरे पड़े हैं।।1।।

रेंगेः रेओ मिसिंग्ड़ तेतंग्ड़ रेओ मिसिंग्ड़
गितिले तकिद् ज मिसिंग्ड़ तकिद् कनोः मे।
रेगेः रेओ मिसिंग्ड़ तेतंग्ड़ रेओ मिसिंग्ड़,
दः दोड़ोमे जा मिसिंग्ड़ दोड़ोम कनोः मे।।2।।

दुरंग-55

राग - माँगे
विषय - चेण्ड़ें को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

सालू आर केयाद्

निरा दाई निरा दाई,
निरा गोंगोर सालू दोजा-2 हयरी हा....।
निरा दाई निरा दाई,
निरा मैनो दोजा-2 हयरी हा....।।1।।
नोकोएगे नसुल तःई
निरा गोंगोर सालू दोजा-2 हयरी हा....।
चिमयगे जोतोन तई,
निरा मैनो दोजा-2 हयरी हा....।।2।।
मुण्डा कोगे नसुल तई,
निरा गोंगोर सालू दोजा-2 हयरी हा....।
सनता कोगे जोतीन तई,
निरा मैनो दोजा-2 हयरी हा....।।3।।
लुपुः तेको नसुल तई,
निरा गोंगोर सालू दोजा-2 हयरी हा....।
कुदी तेको जोतोन तई,
निरा मैनो दोजा-2 हयरी हा....।।।4।।

पर हे बहन, भूख में भी, प्यास में भी
बालुवा राशि के समान (समन्दर के किनारे)
चुपचाप पड़ी रहो।
हे प्यारी बहन, दुख-जंजाल के समय भी
धैर्य रखते हुए समन्दर के पक्षी की तरह
अविचल, निश्चल पड़ी रहो।

दुरंग–55

राग – मागे
विषय – पक्षीगण वर्षा के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

सालू और मैना

हीरा दीदी, हीरा दीदी देखो,
यह हीरा जैसा कैसा सुन्दर सालू चिड़िया है?
हीरा दीदी, हीरा दीदी देखो,
यह हीरा जैसा कैसा सुन्दर मैना है?।।1।।

अहा! कौन लोग पाल रखा है,
यह हीरा जैसा सुन्दर सालू चिड़िया?
अहा! यह कौन लोग देख-भाल करता है,
यह हीरा जैसा सुन्दर मैना?।।2।।

अहा! मुण्डा लोगों ने ही पाल रखा है,
यह हीरा जैसा सुन्दर सालू चिड़िया।
सन्थाल लोगों ने ही जतन रखा है,
यह हीरा जैसा सुन्दर मैना।।3।।

ओह, भूसी के सहारे ही पाला गया है,
वह हीरा जैसा सुन्दर सालू चिड़िया।
हाय, खूदी के भरोसे ही जतन कर रखा गया है,
हीरा जैसा सुन्दर मैना।।4।।

दुरंग–56

राग - माँगे
विषय - इनुंग्ड़ को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

बिन्दी कुड़ि

नोकोरे बिन्दी रे बिन्दीम् निनुंग्ड़ केन्
बिन्दीम निनुंग्ड़ केन् हयरी हा....।
चिमै रे बिन्दी रे बिन्दी खेलोड़ी केन् हयरी हा....।।1।।

चन्दय दागे रे बिन्दीम निनुंग्ड़ केन्
बिन्दीम् निनुंग्ड़ केन् हयरी हा....।
हरिया डुडा रे बिन्दीम् खेलोड़ी केन्
बिन्दीम् खेलोड़ी केन्, हयरी हा....।।2।।

हटः होने ते बिन्दीम निनुंग्ड़ केन्
बिन्दीम् निनुंग्ड़ केन् हयरी हा....।
टुपः होने ते बिन्दीम खेलोड़र केन्
बिन्दीम् खेलोड़ी केन् हयरी हा....।।3।।

हटः होने दो बिन्दी केचः जन्
बिन्दी केचः जन हयरी हा....।
टुपः होने दो बिन्दी रपुद जन्
बिन्दी रपुद जन् हयरी हा....।।4।।

दुरंग–57

राग - माँगे
विषय - दुलड़ होन नगेन
सोमय - अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

दुरंग–56

राग – मागे
विषय – बिन्दी नामक लड़की के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

बिन्दी

हे बेटी बिन्दी! तुमने अपना बचपन का जीवन,
खेल-कूद करते हुए कहाँ बिताया था?
हे बिन्दी रानी! अबोध बालिका बन,
किसके संग मन बहलाती रही थी? ।।1।।

हे बेटी, क्या जानती हो कि तुम छत पर
से गिरता बौछार से तुम खेला करती थी?
फिर आंगन पर के धूल के संग
अपना मन बहलाया करती थी? ।।2।।

कुछ बड़ी होने के बाद, छोटा सूप के संग खेली
और फिर सिर पर टोकरी धरी।।3।।

पर (तुम) यौवन हुई तो वह सूप टूट-फट गया।
(और) वह छोटा टोकरी भी पुराना पड़ गया।।4।।

दुरंग–57

राग – मागे
विषय – लाडला औलाद के विषय में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

दुलड़ होन्

दुलाडिंग्ड़ दो दुलाडिंग्ड
हाय रे होनिंग्ड़ दुलाडिंग्ड-2 हयरी हा.... ।
नंदोड़िग्ड़ नो नन्दोड़िंग्ड़,
हायरे होनिंग्ड़ नन्दोडिंग्ड-2 हयरी हा.... ।।1।।
कोएओंग्ड़ चेतने रे होनिंग्ड़ दुलाडिंग्ड़,
दो होनिंग्ड़ दुलाडिंग्ड-2 हयरी हा.... ।
हेबे-हतरे रे होनिंग्ड़ नन्दोडिंग्ड़
दो होनिंग्ड़ नन्दोडिंग्ड़-2 हयरी हा.... ।।2।।
अता-तबेनेरे होनिंग्ड़ दुलाडिंग्ड़,
दो होनिंग्ड़ दुलाडिंग्ड-2 हयरी हा.... ।
गुड़-गोतोम रे होनिंड़ नन्दो डिंग्ड़
दो होनिंग्ड़ नन्दो डिंग्ड़-2 हयरी हा.... ।।3।।

दुरंग-58

राग - माँगे
विषय - सुसुन दुरंग नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

पोरबो

कुडुम्बय-2 रे दादा,
कुडुम्बय कोरे इंदि, दादा कुडुम्बय-2 हायरी हा... ।
मड़मिंग्ड़-2 रे दादा,
मड़मिंग्ड़ कोरे जत्रा, दादा मड़मिंग्ड़-2 हायरी हा... ।।1।।
कुडुम्बय कोरे इंदि दादा,
चिमिन सींगी इंदि दादा चिमिन-2 हायरी हा... ।
मड़मिंग्ड़ कोरे जत्रा दादा,
चिमिन बेड़ा जत्रा दादा, चिमिन बेड़-2 हायरी हा... ।।2।।

लाडला औलाद

दुलार में पलता, दुलार में खेलता,
हाय रे मेरा प्यारा औलाद!
आखों का तारा, सबसे न्यारा,
हाय रे मेरा होनहार औलाद ।।1।।

गोदी के ऊपर खेलता यह प्यारा औलाद,
आँचल पर दुबका पड़ा
यह न्यारा औलाद ।।2।।

च्युड़ा-मुड़ी के सहारे दुलार पाने वाला,
गुड़-मिश्री के बल प्यार पाने वाला यह
प्यारा औलाद ।।3।।

दुरंग-58

राग	-	मागे
विषय	-	पर्व-त्योहार के बारे में
समय	-	अगहन से बरसात तक
मुहुर्त	-	अखाड़ों पर ।

त्योहार

हे भाई, कुड़म्बय नामक गाँव में,
"इन्दी" पर्व की बात याद है न!
हे भ्राता, "मड़मिंग" नामक
टोले में जात्रा की खबर मालूम है न ।।1।।

कुडुम्बय गाँव में इन्दी पर्व तो मनाया जायेगा,
पर किस समय?
मड़मिंग टोले में जात्रा तो लगेगा,
पर, किस बेला में? ।।2।।

कुडुम्बय-2 रे दादा,
तिकिन सींगी इंदि दादा तिकिन सींगी-2 हायरी हा... ।
मड़मिंग्ड़-2 रे दादा
तरसिंग्ड़ बेड़ा जेत्रा दादा,
तरसिंग्ड़-2 हायरी हा... ।।3।।

कुडुम्बय कोरे इंदि दादा,
अईवो दादा इदिजईमे, अईवो दादा..... हायरी हा... ।
मड़मिग्ड़ कोरे जत्रा दादा
अईबो दादा सेटेर जईमे,
अईबे दादा...2 हायरी हा... ।।4।।

दुरंग-59

राग - माँगे
विषय - बा चण्डुः
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

रबंग

जू रबंग्ड़ जू रेयाड़, जू सेनोः में।
जू रबंग्ड़ जू रेयाड़, जू बिरिद् में हायरी हा... ।।1।।

जू रबंग्ड़ सेनोः में, बेपारी को जुड़ी कमाड़ा।
जू रेयाड़ बिरिद में, लेबेना को जोता बराकी हायरी हा... ।।2।।

सेनोः दोरेईंग्ड़ सेनोः गा बा-मण्डी जोमे लेयते।
बिरिद् दोरेईग्ड़ बिरिदा, टेण्डः इलि नू लेयते हायरी हा... ।।3।।

अम दोरे जति जुम्बुड़ी, बा-मण्डीमू तंगिया।
अम दोरे जति तुम्बुड़ी टेण्डः इलिमू तड़ंग्ड़ा हायरी हा... ।।4।।

हाए! कुडुम्बय गाँव में इन्दी पर्व मनाया जायेगा ठीक दोपहर को।
मड़मिंग टोले में जात्रा लगेगा, ठीक दोपहर बाद। ।3।।
हे भाई, इन्दी पर्व में मुझे भी ले जाओ।
हे भ्राता, उस जात्रा में मुझे भी संग रखो। ।4।।

इन्दी - पर्व विशेष, जो लहलहाते खेतों के सहारे मनाया जाता है।

दुरंग-59

राग - मागे
विषय - ठण्ड के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

ठण्ड

खून को जमा देने वाला हे आततायी ठण्ड!
तुम यथा शीघ्र वहाँ से बिदा लेलो।
दातों को बजवा देने वाला हे क्रुर शीत-लहर!
तुम जल्द से जल्द यहाँ से रफुचक्कर हो जाओ। ।1।।
हे आततायी ठण्ड, तुम जल्द से जल्द विदा लेलो,
देखो, व्यापारियों के जोड़ा कम्बल मौजूद है।
हे क्रुर शीत-लहर, तुम यथा शीघ्र दूर हो जाओ,
तिजारतियों के साथ जोड़ा मारकिन मौजूद है। ।2।।
हे गाँव वाले, विदा तो लेलूँगा, पर सरहुल पर्व का
भोज खा कर ही जाऊँगा।
हे भाईयो, दूर तो जाऊँगा पर, तेज हड़िया
पी कर ही दूर होऊँगा। ।3।।
अरे ठण्ड, तुम तो जाति का लालची हो,
सरहुल भोज के इन्तजार में हो।
अरे दुष्ट ठण्ड, तुम तो जाति का लोभी हो,
हड़िया पीने के चक्कर में हो। ।4।।

दुरंग-60

राग - माँगे
विषय - लुकु जोनोः नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

जोनोः आर क्योः

लुकुन्दः बुरू चेतनेरे ने, लुकु जोनोः दो
जनता बदी लतरे रे ने लमः
क्योः दो, हायरी हा... ।।1।।

ने लुकु जोनोः दो, ओकोए गे जोजोः तेया।
ने लमः क्योः दो चिमैगे
क्योः तेया हायरी हा... ।।2।।

ने लुकु जोनोः दो, गतिम् जोजोः तेया।
ने लमः क्योः दो संगमे
क्योः तेया हायरी हा... ।।3।।

दुरंग-61

राग - माँगे
विषय - छिलन नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

छिलन

मुण्डा कोजा मुण्डा को,
कोम्पाट मुण्डा को-2 हायरी हा...।
राजा कोजा राजा को
नगा बंसी राजा को-2 हायरी हा... ।।1।।

कोम्पाट मुण्डा कोजा निलि
काको नुनुआ-2 हायरी हा...।
नगा बंसी राजा को मण्डि
काको जोजोम-2 हायरी हा... ।।2।।

दुरंग–60

राग - मागे
विषय - झाड़ु के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

झाड़ु और पट्टा

लुकुन्दः पहाड़ के ऊपर लुकु घास उग आया है।
जगता नामक तराई पर गोरार का पट्टा फला है।।1।।

अहा! इस लुकु घास से बने झाड़ु से कोन झाड़ु लगायेगी?
अहा! इस गोरार के पट्टे से कौन घर को चमकायेगी?।।2।।

अहा! इस लुकु झाड़ु से तुम्हारी सखि झाड़ु लगायेगी।
अहा! इस गोरार के पट्टे से तुम्हारी बहन घर चमकायेगी।।3।।

दुरंग–61

राग - मागे
विषय - कुसंस्कार के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

कुसंस्कार

हे मुण्डा भाई,
खूँटखटि मुण्डा भाई,
राजा, नाग वंशी राजा महाराजा।।1।।

हाय, रे खूँटखटि मुण्डा हमारे
हाथों बनाया हड़िया नहीं पीते
हाय, ये नागवंशी हमारे घर में
अन्न नहीं ग्रहण करते।।2।।

निलि काको नुनुआ,
मया तेबु चुआ कोव-2 हायरी हा...।
मण्डि काको जोजोम,
चौली तेबु सोंग्ड़ा को-2 हायरी हा...।।3।।

दुरंग-62

राग - माँगे
विषय - डोण्डो मुण्डा को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

डोण्डो मुण्डा को

चेतन् दिसुम् दिकु-सिपई,
चला रे केन चला रे केन्।
लतर गमय साधु-भण्डारी क्यों रे
केन क्यों रे केन् हायरी हा...।।1।।
चला चिगए असी तन,
चला रे केन चला रेकेन्।
केयोः चिगए नमे तन् क्यों रे
केन क्यों रे केन हायरी हा...।।2।।
इलि चिगए चला तेय
चला रे केन चला रे केन।
गोंड़ा चिगए गुरिः तेय,
क्योंरे केन क्यों रे केन हायरी हा...।।3।।

दुरंग-63

राग - माँगे
विषय - बाबा-बिड़ा नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

ये हमारा हड़िया नहीं पीते,
इन्हें गीला चावल ही दिया जाए।
ये हमारे घर का अन्न ग्रहण नहीं करते,
इन्हें चावल ही दिया जाए।।3।।

दुरंग-62

राग - मागे
विषय - अपढ़ मुण्डाओं के बारे में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

अपढ़ मुण्डाजन

पश्चिम दिशा से आये पढ़े-लिखे लोग और
सिपाही गण "चला रे चला रे" कहे जा रहे हैं।
पूरब के इलाके से पहुँचे साधु-सत "क्यों रे क्यों रे"बोले जा रहे हैं।।1।।
अरे देखो, शायद ये हँड़िया-छननी माँग रहे हैं,
चला रे चला रे कहे जा रहे हैं।
सुनो, शायद ये क्योः, माँग रहे हैं,"क्यों क्यों" बोले जा रहे है।।2।।
ओह! शायद ये हँड़िया छलनी करेंगे
चला रे चला रे कहे जा रहे हैं।
ओह! शायद ये घर को चिकना करेंगे क्यों क्यों बोले जा रहे हैं।।3।।

दुरंग-63

राग - मागे
विषय - धान रोपाई के बारे में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

बाबा रोवा

हाय नागुरी नागरी हाय
नागुरी रोवा बाबा दो।
हाय नागुरी नागरी हाय
नागुरी बेंटा बियाँड़ दो, हायरी हा...।।1।।

हाय नागुरी नागरी
रोवा बाबा नातु तान दो।
हाय नागुरी नागरी बेंटा
बियाँड़ बुअलेतन, हायरी हा...।।2।।

रोवा बाबा नातु तन,
बिंग्ड़े को निकिर ते।
बेन्टा बियाँड़ बुअलेतन तयाने
को मण्डोव ते हायरी हा...।।3।।

दुरंग-64

राग - माँगे
विषय - लुमंग्ड़ नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

लुमंग

लुमामिंग्ड़ गो लुमामिंग्ड, किता सुबा लुमामिंग्ड।
लड़िया गो लड़िया तली सुबा लगिया हायरी हा....।।1।।

किता सुबा लुमामिंग्ड दो
किता रेगेः तोलेनजन।
तली सुबा लंड़िया दो तली रेगेः
नेवोड़न जन हायरी हा...।।2।।

बलेः नोपद बनोः लेक
किता रेगे तोलेन।
लिन्डुग्ड़ सरजोम् बनोः लेक
तली रेगे नेबोड़न जन हायरी हा...।।3।।

धान रोपाई

हे ग्रामवासी! अब धान रोपाई का समय आ गया है।
हे भाई अब धान के गाछी लगाने का मौसम
भी अब समाप्त हो गया है।।1।।

आह! देखो, रोपा हुआ धान
बाढ़ पानी में बह रहा है।
हे भाई देखो, बँधा हुआ गाछी भी पानी के ऊपर तैर रहा है।।2।।

हाय! रोपा हुआ धान बहे जा रहा है,
साँपों के वास स्थान गहरे समन्दर में।
हाय! बँधा हुआ गाछी पानी में तैर रहा है,
घड़ियाली के वास स्थान भंवर जाल में।।3।।

दुरंग-64

राग - मागे
विषय - तसर के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

तसर

अरे देखो देखो, खजूर वृक्ष के नीचे, तसर को देखो.....।
अरे पहचानो पहचानो, ताड़ वृक्ष के तले,
लड़िया का पहचानो.....।।1।।

और देखो, वह उसी खुजर वृक्ष पर बँध गया है।
और पहचानो, वह लड़िया उसी ताड़ वृक्ष
पर बस गया है।।2।।

हाय! कोमल डाल न रहने के जैसा
उस बूढ़ी डाल पर बँध गया है।
हाय! सखुआ का डाल न रहने
के जैसा वह ताड़ पर ही बस गया है।।3।।

दुरंग-65

राग - माँगे
विषय - रबंग्ड़ नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

उरू

बोलो मेजा नुरू बोलो में,
रबंग्ड़ नुरू राबंग्ड़ा।
सोड़ो मेजा नुरू सोड़ो में रेयाड़
नुरू रेयाड़ा हायरी हा....।।1।।

किचिरि दो हिन्दिल दिपिल,
चिका लेकाईग्ड़ा बोलोवा।
पैला दो जिपिर-जिटः मेरे
लेकाईग्ड़ सोड़ोव हायरी हा....।।2।।

तरा कोचाईंग बोलो केन,
तरा कोचा हनारिंग्ड़ को।
तरा कोचाईंग सोड़ो केन तरा
कोचा किमिनिंग्ड़ को हायरी हा....।।3।।

दुरंग-66

राग - माँगे
विषय - संगे-सोंगति नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

रसिका रासि

इतिः इतिः नोकोए हिजुः तन
सेकेः सेकेः साका साड़िया।
इतिः इतिः चिमै सेटेर तन
टाम् टुम टुईला रूम्बुला हायरी हा...।।1।।

दुरंग–65

राग – मागे
विषय – कीट के बारे में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

कीट

हे काला कीट! जाओ जाओ अपने बिल में,
जा छिपो। क्योंकि जाड़े का मौसम आ रहा है।
हे काला कीट! जाओ जाओ, ओझल हो जाओ।
क्योंकि अब ठण्डक आने ही वाली है।।1।।

हे भाई! मेरा तो कपड़े भी फटे-पुराने हैं,
कैसे बिल में जा सकता हूँ?
आह! मेरी आँचल भी भींगी-सड़ी है,
मैं कैसे किसी कोने पर जा छिपूँ?।।2।।

हाय! बिल के दरवाजे पर
गया था वहाँ मेरी माँ बैठी है।
फिर, दूसरे कोने पर गया,
वहाँ मेरी बहुरिया मिली।।3।।

दुरंग–66

राग – मागे
विषय – कीट के बारे में
समय – अगहन से बरसात तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

रसिक

सुनो सुनो, वह कौन आ रहा है,
साक-सूक साखा की आवाज आ रही है?
सुनो सुनो, वह कौन आ रहा है,
रिग-रोग पोला की साड़ा सुनाई दे रही है?।।1।।

इतिः इतिः गतिम् हिजः
तन सेकेः सेकेः साका साड़िया।
इतिः इतिः संगम सेटेर तन
टाम-टूम टुईलः रूम्बुला हायरी हा.... ।।2।।

दुरंग-67

राग - माँगे
विषय - सकम चरिः नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

सकम चरिः

गड़ा जपः जपःते नोको सकम्
बुगिनम् सला सकामा।
नईमा नसीम नसीमते मेरे
चरिः नपंग्ड़म् पिति चरिगा हायरी हा.... ।।1।।
गड़ा जपः जपः तोवा-सकम्
बुगिनम् सला सकामा।
नईमा नसीम् नसीमते रंगा चरिः
नपंग्ड़म् पिति चरिगा हायरी हा.. ।।2।।
तोवा सकम् बुगिनेम् मेने
तोवा सकम माली कुड़ि दो।
रंगा चरिः नपंग्ड़मेम् मेरे रंगा
चरिः सरगा कोड़ा दो हायरी हा.... ।।3।।

अरे सुनो सुनो, मेरी सखी आ रही है,
साक-सुक साखा की आवाज आ रही है।
अरे पहचानो पहचानो, मेरी सहेली पधार रही है,
रिंग-राग पोला का साड़ा सुनाई दे रहा है।।2।।

विशेष - पोला - पाँव की ऊँगलियों पर पहिना जाने वाला चाँदी का रिंग।

दुरंग-67

राग - मागे
विषय - पत्ता और बित्ती के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

पत्ता और बित्ती

हे लड़की! नदी के किनारे-किनारे कौन-सी पत्तियाँ साफ है,
कि उन्हें खोजती फिर रही हो?
हे लड़की! बाँस के जंगल में कौन-सा बित्ती टिकाऊ है कि,
उन्हें घुर-घुर कर देख रही हो?।।1।।
अहा! नदी के किनारे-किनारे तोवा वृक्ष के पत्ते साफ है
मैं उन्हें ही खोजती-फिरती हूँ।
अहा! जंगल में लाल बासँ की बित्ती टिकाऊ है,
मैं उन्हें ही खोजती फिर रही हूँ।।2।।
हाय! तुम तोवा के पत्ते को अच्छी कहती हो,
वह तो अछूत कन्या की निशानी है।
हाय! लाल बाँस की टिकाउ कहती हो,
वह तो सरगा कुमार की पहचान है।।3।।

दुरंग–68

राग – माँगे
विषय – जगर कुड़ि नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे।

नगर

बिण्डा तईंदो बिण्डा तईंग
क्योरा बा बिण्डा तईंग़ दो।
नचा तईंदो नचा तईंग
नलगुला बा नचा तईंग दो।।1।।

नोकोरेगाम् दो केद्
क्योरा बा बिण्डा तईंग दो।
चिमै रेगम दोड़ोम् केद्
नलगुला बा नचा तईंग दो।।2।।

कचि मईनम् लेले जद,
बन्दी बाबा चेतन रे।
कचि मईनम् चिना जद्
चौली टुँकी लतर रे।।3।।

दुरंग–69

राग – माँगे
विषय – पिरिति नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे।

पिरिति नाड़ी

कुचा–मुचा कुन्दुरूए कुचा केसेद् किंग़ड़ा जा कुन्दुरू।
नाड़ी–नाड़ी पलण्डु नाड़ी कोटोंग़ड़ किंग़ड़ा जा पलण्डु हायरी हा...।।1।।

जिगे बड़े सुकु जना, कुचा केसेद किंग़ड़ जा कुन्दुरू।
कुड़म् बाड़े नपए जना, नाड़ी कोटोंग किंग़ड़ जा पलण्ड हायरी हा..।।2।।

दुरंग-68

राग - मागे
विषय - बात-चीत के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

संवाद

मेरे घड़े का बिंडा जो है
क्योरा फूल का बना बिंडा है।
मेरे डोरियाँ जो है नंगुला फूल के बने डोरियाँ हैं।।1।।

हे माँ, तुम क्योड़ा फल
का बिंडा कहाँ रख दी?
हे माँ! तुम नगुला फूल के बने डोरिया कहाँ पर पड़े हैं?।।2।।

हे बेटिया, देखती नहीं धान मोरा के
ऊपर रखा हुआ है।
हे लड़की, पहचानती नहीं चावल भरे टोकरी के उपर पड़े हुए हैं।।3।।

दुरंग-69

राग - माँगे
विषय - प्रेम के खातिर
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

प्रेम-लता

कुण्डली-मण्डली कुन्दरी ने भला, मुझे धेर लिया।
सीधा-सपाट पलण्डु ने हाय, मुझे छेक लिया।।1।।

अहा! उसका मन ही मुझ पर रम गया कि मुझे धेर लिया।
हाय! उसका हृदय ही बँध गया कि मुझे छेक लिया।।2।।

दुरंग–70

राग – माँगे
विषय – सेनोः तन सोमय नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे।

गोनोए

नेगईंग्ड़–नपुईंग्ड़ तई केन रे,
नेदेल बा सका तेईग्ड़ साका केनू।
हिसि–बारेंग्ड़ तई केन रे,
मुन्गा–बा मन्दुली तेईंग्ड़ मन्दुली केन हायरी हा....।।1।।

नेगईंग्ड़–अपुईंग्ड़ बंकु जन,
नेदेल बा साका दो रपुद, जन।
हिसि–बारेंग्ड़ बांकु जनू
मुन्गा बा मंन्दुली दो चेपो जन, हायरी हा....।।2।।

दुरंग–71

राग – माँगे
विषय – एद् कनू यूग नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे।

कलियुग

सान नगुम सेनोः रेदो गतिंग्ड़,
अलो गतिंग्ड़ नयारेना।
सकम् हेएःम् बिरिदे रे दो संगईंग्ड़,
नलो संगईंग्ड़ तयोमेन।।1।।

कोकोः डन्डः कुला जनू गतिंग्ड़,
नलो गतिंग्ड़ नया रेन।
कुड़ा–सकम् बिंग्डे जन संगईग्ड़
नलो संगईम् तयोमेन।।2।।

दुरंग–70

राग - माँगे
विषय - मृत्यु के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

मृत्यु

ओह! जब मेरे माता-पिता जीवित थे (तब)
मैं सेमल के फूल का बना साखा पहना करती थी।
आह! जब मेरे भाई-बहन साथ में थे (तब)
मुन्गा फूल का बना मन्दोली पहना करती थी।।1।।

अब माता-पिता नहीं रहे (तब)
सेमल के फूल का साखा भी टूट गया।
अब भाई-बहन भी नहीं रहे (तो)
मुन्गा फूल का मन्दोली भी खिया गया।।2।।

दुरंग–71

राग - माँगे
विषय - कलियुग के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

कलियुग

हे सखि, यदि जंगल लकड़ी लाने जाओगी (तो)
कभी आगे नहीं रहना।
हे बहन, यदि जंगल पत्ता तोड़ने जाना हो (तो)
कभी पीछे नहीं रहना।।1।।

(क्योंकि) इस युग में रक्षक कुल्हाड़ी ही शेर बन जाता है।
अतः आगे मत रहना।
(क्योंकि) इस युग में मोड़े हुए पत्ते ही साँप बन जाता है।
अतः पीछे मत रहना।।2।।

दुरंग–72

राग – माँगे
विषय – रेगेः नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे।

रेगेः बलय

डण्डः ओड़ः लेमू–लेमू
नेते नेका जोजो रोवा।
चतोमू रोसोमू चोम चोम,
नेते नेका लिलिंग्डया।।1।।

साउड़ी चि बनोगा,
नेते नेका जोजोरोवा।
बड़ोवा चि बनोगा,
नेते नेका लिलिंग्ड़या।।2।।

मिदे बिता लईः नगेन,
साउड़ी दोले अकिरिंग्ड़ केद्।
बरे मुका गजि नगेन,
बाड़ोवा दोले केजा केद।।3।।

दुरंग–73

राग – माँगे
विषय – कुपुल माईन नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे।

कुपुल माईन

निकु दोरे दो–2
अगामारी कोचि रेको, गेयोन–गेयोना।
निकु दोरे दो–2
दरोमू दः कोचि रेको लेपालाड़िया।।1।।

दुरंग–72

राग - माँगे
विषय - गरीबी बदहाल के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

गरीबी–बदहाल

टूटी–फूटी झोपड़ी का बदहाल है (कि)
सर्वत्र बरसात का पानी चूने लगा है।
ओह! खपरैला घर का यह हाल कि
जहाँ–तहाँ से बरसात का पानी घुस
आने लगा है।।1।।

क्यों?पहाड़ पर साउड़ी नहीं है कि
सर्वत्र पानी चूने लगा है?
अरे, नदियों में बड़ोवा नहीं है कि
जहाँ–तहाँ पानी घुसने लगा है?।।2।।

हाय! हमने एक बित्ता पेट के लिये
साउड़ी तो बेच डाला।
ओह! हमने दो गज कपड़ा के खातिर
बड़ोवा तो गिरवी रख दिया है।।3।।

दुरंग–73

राग - माँगे
विषय - अथिति सत्कार के विषय में
समय - अगहन से बरसात तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

अथिति सत्कार

भई ये सब तो–2
आगामारी पक्षी हैं कि पंक्तिबद्ध उड़े जा रहें हैं।
अहा! शायद ये सब तो–2
वर्षा के स्वागतार्थ हैं कि पंख फैले उड़े आ रहे हैं।।1।।

नुदुबा कोपे-2
जोजो को जम्बुलय नुदुबा कोपे।
चुण्डुला कोपे-2
नुलि को नम्बराय चुण्डुला कोपे।।2।।
काको सुकुजन-2
जोजो को जुम्बुलय काको सुकुजन।
काको नयए जन-2
नुलि को नकाय काको नप एए जन।।3।।

दुरंग-74

राग - जपी
विषय - किचिरी नुरा होड़ो नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे, सेन्देरा सोमय कोरे।

किचिरि नुरा

जिलि मिलि सेरेंग्ड़ रे,
किचिरी नुरा कुड़ि किंग्ड़ बई किचिरी नुरा....।
चापाचुड़ी सड़ागी रे,
गमेचा सोबोद कोड़ा किंग्ड़, बई गमेया सोबोद....।।1।।
किचिरी नुरा कुडिकिंग्ड़,
किचिरी नतुतान, बई किचिरी नतु....।
गमेचा सोबोद कोड़ा किंग्ड़,
गमेचा बुवले ताना, बई गमेचा बुवल....।।2।।
किचरी नतुतना,
बिंग्ड़ को निकिरे ते, बई बिंग्ड़ को.....।
गमेचा बुवले तान,
तयन को मण्डोवा ते, बई तयन.....।।3।।

अरे भई उन्हें जल्दी से बता दो-2
उस ईमली के झुरमुठ को बता दो
अरे भई जल्दी से इशारे से बता दो-2
आम के बगीचा की ओर बता दो।।2।।
नहीं भई नहीं, इसे पसंद नहीं हैं-2
ईमली का झुरमुठ इन्हें पसंद नहीं है।
नहीं भई नहीं, इन्हें इच्छा नहीं है-2
आम की बगीचा इन्हें पर ठहरने को इच्छा नहीं है।।3।।

दुरंग-74

राग - जपी
विषय - कपड़ा धोने वाले के बारे में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों एवं शिकार खेल कर आने के समय।

घाट पर

नदी से सटा विशाल समतली पत्थर पर,
दो बालिकाएँ कपड़े धो रही हैं....2।
कादो भरे पहाड़ी नाले पर,
दो बालक अंगोछा साफ कर रहे हैं....2।
हे कपड़े धोने वाली बालाएँ
देखो, कपड़े तो नदी में बहे जा रहे हैं....2।
हे अंगोछा साफ करने वाले बालक
अंगोछा तो गहराई में डूबे जा रहा है....2।
अरे कपड़े बहे जा रहे हैं
साँप भरे समन्दर में...2।
अरे अंगोछा डूबे जा रहे हैं
घड़ियालों की कुण्डली में....2।।

दुरंग–75

राग – जपी
विषय – सेन्देरा नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – सेन्देरा सोमय। अखाड़ा कोरे।

सेन्देरा

गड़ा–गड़ा ते लंग्ड़ दोए बियानए
बोएवोन। बाई लंग्ड़.....।
नई–नई दोबा दोए तिपारए–तोपोए,
बाई दोबा....।।1।।

मरे हो तुईं पे, लंग्ड़ दो
बियानए–बोएवोन, बाई लंग्ड़.....।
तेरे हो तेरंग्ड़ी पे, दोबा दोए
तिपारए–तोपोर बाई दोबा....।।2।।

मरे हो टोःगे जन, चुटी–मा कनासुल रे,
बाई चुटी–मा कनासुल रे।
तेरे हो गुतु जन, सुबा मा सेरो मेरे,
बाई सुबा मा सेरोमेरे।।3।।

मरे हो मयोम केद, डेलका बुडु दो,
बई डेलका बुडु दो।
तेरे हो किरूम केद, लुकन्दः बुरू दो,
बई सुकुन्दः बुरू दो।।4।।

मरे हो रकबे जन, लुकुन्दः बुरू चेतने ते,
बई लुकुन्दः बुरू चेतन ते।
तेरे नोसोनेन जन जनता बदी लतर ते,
बई जनता बदी लतरे ते।।5।।

दुरंग–75

राग - जपी
विषय - शिकार खेलने वालों के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों एवं शिकार खेल कर आने के समय।

शिकार

पहाड़ी नाले से हो कर लंग पक्षी उड़ा जा रहा है
तो उड़ा जा रहा है....।
पहाड़ की तराई हो कर दोवा पक्षी चल रहा है
तो चल रहा है...।।1।।

अरे, उस पर तीर चलाओ वह उड़े जा रहा है
तो उड़े जा रहा है....
अरे, उस पर चिंयरि चलाओ वह चर रहा है
तो चर रहा है....।।2।।

अरे, उसे तीर लग गयी उपरी पंख पर
तो उपरी पंख पर....
अरे, उसे चियरि विंध गयी उसके गले पर
तो विंध गयी उसके गले पर....।।3।।

ओह! देखो खून से मिट्टी का धेला सन गया
तो खून से मिट्टी सन गया....
हाय! देखो लुकुन्दाः पहाड़ रक्तरंजित हो गया
तो रक्त रंजित हो गया.....।।4।।

अहो, वह उड़ गया लुकुन्दाः पहाड़ पर
तो लुकुन्दाः पहाड़ पर....
अहा, ओझल हो गया। जनतै तराई पर
तो जनतै तराई पर.....।।5।।

दुरंग-76

राग - जपी
विषय - सेन्देरा कोड़ा को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त -

सेन्देरा कोड़ा को

सेन्देरा कोड़ा को कपि जिलिब जिलिबा,
बई कपि जिलिब-2।
कारेंगा कोड़ा को सार सिंड़य-सोड़ोए,
बई सार-सिंड़ाए-2।।1।।

नोको बुरू को सेन्देरा केन, कपि जिलिब जिलिबा,
बई कपि जिलिब-2
चिमै बेड़ा को कारेंगा केनू सार सिंड़ाए-सोंड़ोए,
बई सार सिड़ाए-सोंडोंए।2

मरंग्ड़ बुरू को सेन्देरा केन, कपि जिलिब जिलिबा,
बई कपि जिलिब-2
हुड़िग्ड़ बेड़ा को कारेंगा केन सार-सिंड़ाए-सोड़ोए,
बई सार सिड़ाए-सोंड़ोए।।3।।

दुरंग-77

राग - जपी
विषय - कुपुल मईन नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

असरए रे

नोकोए हिजुः तन मई होरा गेम नेले तनू मई
होरा गेन- नेले तन, हयरी हा.....
चिमै सेटेर तन मई, डारेन गेमू चिना तन, मई
डारेन जेम-चिना तम।।1।।

दुरंग–76

राग – जपी
विषय – शिकारियों के बारे में
समय – अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त – अखाड़ों एवं शिकार खेल कर आने के समय।

शिकारी

देखो, शिकारियों के हाथों बलुआ चकमक कर रहे हैं
तो चकमक कर रहे हैं.....
सुनो सुनो ब्याधाओं के पीठ पर तीरों की सनसनाहट
तो तीरों की सनसनाहट... ।।1।।

हाय कौन-सा पहाड़ पर जायेंगे बलुआ जो चकमक कर रहे हैं
तो चकमक कर रहे हैं....
ओह कौन-सी तराई पर उतरेंगे जो तीर सनसना रही है
तो तीर सनसना रही हैं.... ।।2।।

अरे ऊँची पहाड़ पर जायेंगे बलुआ जो चकमक कर रहे हैं
तो बलुआ चकमक कर रहे हैं.....
छोटी तराई पर उतरेंगे तीर जो सनसना रही हैं
तो तीर सनसना रही हैं.... ।।3।।

दुरंग–77

राग – जपी
विषय – आस के बारे में
समय – अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

आस में

हे बेटी! कौन आने वाला है
कि तुम रास्ता ही देख रही हो?
कि तुम रास्ता ही देख....2

गतिम हिजुः तन मई होरा गेमू नेलतन, मई
होरा गेम नेले तन-2, हयरी हा.....
संगम सेटेरे तन मई डारेन गेम, चिमा तन मई
डारेन गेम-चिना तनू । ।2 । ।

गतिम नेले नेले, ने चौलीम-चपिया, मई
चौलीम चपिया, हयरी हा.....
संगम चिना चिना ते तबेनेम, रूग्ड़ँगा, मई
तवेनोम रूडुँग्ड़ा । ।3 । ।

दुरंग-78

राग - जपी
विषय - बिर सेंगेल नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

बुरू सेंगल

हेसेला मेरेला, हेसेला लो तन, बई
हेसेला लो तन ।
हेसेला मेरेला, मेरेला बले तन, बई
मेरेला बले तन । ।1 । ।
नोकोएगे लो केदू, हेसेला लो तनू बई,
हेसेला बलो तन
चिमैगे जुण्डी केद मेरेला बले तन, बई
मेरेला बले तन । ।2 । ।
दासी कोड़ा लो केद, हेसेला लो तन, बई
हेसेला लो तन ।
कमड़ी कुड़ि जुण्डी केद, मेरेला बले तन, बई
मेरेला बले तन । ।3 । ।

हे बेटी! कौन पहुँचने वाला है कि तुम उधर ही हुलक रही हो?
कि तुम उधर ही हुलक....2
अहा! तुम्हारी सखी आने वाली है
कि तुम रास्ता ही देख रही हो कि तुम रास्ता ही देख....2
ओह! तुम्हारी बहन पहुँचने वाली है कि
तुम उधर ही हुलक रही हो कि उधर ही हुलक रही.....2
आह राह देखते-देखते चावल परसे
कंकड़ चुनती हो तो चावल से कंकड़...2
ओह बहन को पहचानते-पहचानते तुम
चिउड़ा कूटती हो तो चिउड़ा कूटती.....2।।

दुरंग-78

राग - जपी
विषय - दवानल के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

दवानल

उफ! हेसेल और आंवला,
हेसेल तुम दवानल में जले जा रहे हो.....2
ओह! हेसेल और आंवला, आंवला तुम
दवानल में झुलसे जा रहे हो....2।
हाय! किसने आग लगाया कि हेसेल तुम
जले जा रहे हो....2
किसने चिनगारी फेकी कि आंवला तुम
झुलसे जा रहे हो....2।
सच! (कोई) धांगर ने ही आग लगाई कि हेसेल
तुम जले जा रहे हो....2
ठिक! (दासी) ने ही चिनगारी फेकी कि आंवला
तुम झुलसे जा रहे हो...2।

मरे हो मानई पे, हेसेला लो तन, बई
हसेला लो तन।
मरे हो चिनई पे, हेसेला बले तन, बई
हेसेला बले तन।।4।।

गेना

दुरंग–79

राग – गेना
विषय – सेनोः तन सोमय नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे।

जीवोन जंजाल

सिरी जटी नोड़ः रेमा गतिंग्ड़,
पटः गोंड़ा सेसोम रे...ए...ए...ए...।।1।।
(ओहो) बा लेकम नुड़ंग्ड़ लेन गतिंग्ड़,
डली लेकम पयार लेन...न...न...।।2।।
बा लेकम नुडुग्ड़ लेन गतिंग्,
बा लेकम, गोसो जन...न...न...।।3।।
(ओहो) डली लेकम पयार लेन गतिग्ड़
डली लेकम मैला जन...न...न...।।4।।
ओते लोलो तनू गतिंग्ड़
बा लेकम गोसो जन...न...न..न।।5।।
(ओहो) सिरिमा जेटे तन गतिंग्ड़
डली लेकम मैला जनू...न...न...न...।।6।।
सोमय सेनोः तनू गतिंग्ड़,
बा लेकम गोमो जन...न...न....।।7।।
(ओहो) नुसड़ बिरिद तनू गतिंग्ड़
डली लेकम मैला जन...न...न..।।8।।

अरे! चलो उसे मना करो कि हेसेल जले जा रही है
तो जले जा रही है.....2
आह! देखो भगाओ कि आंवला
झुलसे जा रहा है तो झुलसे....2 ।।

दुरंग–79

राग – गेना
विषय – जीवन–जंजाल के विषय में
समय – अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

जीवन–जंजाल

घास–पात की झोपड़ी में हो या
गौशालेसरीखे बासा में,
(फिर भी) खिले फूल के समान लग रहे हो।
एवं नयी कोपल के समान दिखाई दे रही हो।।1।।
खिले फूल के समान लग रही हो, पर
हाय! फूल के समान ही मुरझाने लगी हो
कोंपल के समान दिखाई दे रही हो, पर
ओह! कोंपल के समान ही झुलसने लगी हो।।2।।
धरती की गर्मी बढ़ रही है, इसलिये
फूल के समान झुलसने लगी हो
आकाश का तापक्रम बढ़ रहा है, अतः
कोपल के समान झुलसने लगी हो।।3।।
नहीं, तुम्हारी उम्र बढ़ रही है,
इसलिये फूल के समान मुरझाने लगी हो
नहीं, तुम्हारे दिन बीत रहे हैं,
इसलिये कोपल के समान झुलसने लगी हो।।4।।

दुरंग-80

राग - गेना
विषय - बाजा नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

बाजा

दा तईंग्ड़ गो टुईला,
दा तईंग्ड़ गो डिण्डा केन्दरा...अ....अ.... ।।1।।
गितिः नोड़ः रे टुईला,
जारू रोसोम् रे डिण्डा केन्दरा...अ....अ.... ।।2।।
गितिः नोड़ः लो तन्
जारू रोसोम् डिण्डा, बले तन्...न...न... ।।3।।
हाय टुईला लो तन्
जारू रोसोम, डिण्डा बले तन्...न...न... ।।4।।
दुडुई लेका लो तन,
जारू रोसोम, डिण्डा बले तन्...न...न... ।।5।।
हिरचि में गतिंग्ड़,
दुडुई लेका लो तन, तन्...न...न... ।।6।।
तिरपि में डिण्डा,
मोगोद लेका लो तन, तन्...न...न... ।।7।।

दुरंग-80

राग - गेना
विषय - वाद्य के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

वाद्य यंत्र

हे रसिक गण! लाओ मेरा प्रिय टुईला,
(और) मेरा बचपन का केन्दरा।
जारू-बासा में मेरा टुईला टँगा हुआ है
और बैठक खाने में मेरा केन्दरा पड़ा हुआ है।।2।।
हे रसिक राज! जारू बासा तो जल रहा है
और बैठक खाने भी आग की लपेट में है।।3।।
हाय! मेरा टुईला तो जल रहा है
ओह! मेरा केन्दरा भी राख हुआ जा रहा है।।4।।
देखो देखो धू-धू कर टूईला जल रहा है।
और रह-रह कर केन्दरा राख हुआ जा रहा है।।5।।
अरे चलो चलो आग को बुझाव धू-धू कर जल रहा है
अरे चलो पानी का छिड़काव करो राख हुआ जा रहा है।।6।।

टुईला, केन्दरा - वाद्य यंत्र
जारू बासा - रात्रि क्लब

दुरंग-81

राग - गेना
विषय - जो को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

जो

डाड़ी नोरा जोजो हेसः हो,
हेसः गतिंग्ड़ नुयुगाईगमें...ए....ए....ए.... ।।1।।
कोलोम जपः हेरो बारू हो
बरू संगईंगं नुयुगाईगमें...ए....ए....ए.... ।।2।।
नुयुः दोरेंग नुयुः मेया हो
ओाके कोरेंग्ड़ नुयुः मेया अ....अ....अ... ।।3।।
नोसोर दोरेंग्ड़ नोसोरा मेया,
चिमय कोरेंगड़ नोसारो मेया....अ....अ...अ... ।।4।।
सेरेग्ड़ रेगेईंग्ड़ नुयुः मेया हो,
सेरेग्ड़-सेरेग्ड़ सोवाना....अ....अ...अ... ।।5।।
नोते रेगेईंड़ नोसोरा नेया हो,
नोते-नोते सिंड़िंगा....अ....अ...अ... ।।6।।

दुरंग-82

राग - गेना
विषय - बा-सुड़ा संगनू नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

बा-जेग

मिद् कोतो हो सरजोम् बा,
मिद् कोनो सरेगाईंग्ड़ में...ए...ए...ए... ।।1।।

दुरंग-81

राग - गेना
विषय - फल के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

फल

चुआँ जाने की राह पर का खट्टा पीपल,
हे सखि, पका फल मुझे गिराओगे? ।।1।।
खलिहान के किनारे पर का बुढ़ाउ कुसुम,
हे बहन, पका कुसुम मुझे
उपलब्ध कराओगे? ।।2।।
हे सखि गिराऊँगा तो जरूर, पर कहाँ?
हे दीदी उपलब्ध कराऊँगी
तो जरूर, पर किसमें? ।।3।।
यदि पत्थर पर गिराती हूँ
तो पत्थर-पत्थर गंध दे
यदि जमीन पर उपलब्ध कराती हूँ
तो जमीन-जमीन वास आयेगा ।।4।।

दुरंग-82

राग - गेना
विषय - सरहुल त्योहार के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

सरहूल त्योहार

हे भाई लोग कम से कम एक
डाल सखुए का फूल
मेरे लिये बचा कर रखो
हे मेरे दोस्त लोग कम से कम

बरे दाड़ा हो सुड़ा-संगेन
बरे दाड़ा नेडेलाईंग्ड़ं में...ए...ए...ए... ।।2।।
मिद् कोतो हो सरेगा मे रे,
चि होम चिकाया....अ....अ...अ... ।।3।।
बरे दाड़ा हो नेडेलामे रे,
मेरे होम् रिकाया...अ...अ...अ.... ।।4।।
मिद् कोतो हो सरेगाईंग्ड़ में
बा होईंग्ड़ गुतुईया...अ...अ....अ.... ।।5।।
बरे गाड़ा हो नेडेलाईग्ड़ में,
डली होईंग्ड़ गलाग्डे...ए....ए....ए.... ।।6।।

दुरंग-83

राग - गेना
विषय - हाई को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

हाई को

लिंण्डा जा दिरी लिंण्डा हो,
लिंण्डा जा-मू रकब लेन...न....न...न... ।।1।।
अयरा-जा सकम् अयरा हो,
अयरा जा-मू ऊपर लेनू...न...न...न.... ।।2।।
लिंण्डा जा-मू रकब लेना हो,
चिको मेनम् रकब लेनू...न...न...न.... ।।3।।
लिंण्डा जा-मू रकब लेना हो,
इकिर लेलेम् रकब लेनू...न...न...न.... ।।4।।
अयरा जा-मू ऊपर लेन हो
तोयोर चिनम् ऊपर लेनू...न...न...न.... ।।5।।
कचि लिण्डम् बोरो तेमा हो
बुरू रे दो बुरू पोटोः...ओ....ओ....ओ.... ।।6।।

दो डालियाँ तो सखुए के कोपले मेरे लिये संजोए कर रखो।।1।।

अरे भाई एक डाल बचा रखूँ
तो उसका क्या करोगे?
हे दोस्त दो कोंपले खंजोए कर रखूँ तो
उसे किस काम में लगाओगे?।।2।।

अहा! एक डाल बचा कर रखोगे तो उसका फूल माला बनाऊँगा।
अहा! दो डालियाँ संजोए कर रखोगे तो
उन्हें काम पर खोसुँगा।।3।।

दुरंग-83

राग - गेना
विषय - मछली के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

मछलियाँ

हे लिण्डा, पत्थर पर चलने वाली,
लिण्डा तुम नदी के मुहाने पर चली गयी।
हे अयरा पत्ते-सा दीखने वाला,
पानी की सतह पर किस बहाने आया था?।।1।।

हे लिण्डा मुहाने पर किस काम से आयी थी?
हे अयरा पानी की सतह पर किस लिये आया था?
हे लिण्डा (शायद) तुम गहराई देखने आयी थी।
हे अयरा (शायद) तुम पानी का भंवर पहचानने आया था।।2।।

अरे लिण्डा तुम्हें डर नहीं कि
पहाड़ पर विषौला पोटोः फला है?
हाय अयरा तुम्हें पता नहीं कि
तराई पर तराई वाला चुरचु पका है?।।3।।

हे (इन्सान) मुझे इसका कतई भय नहीं,
क्योंकि पोटोः तो मेरी माँ है।

कोच अमरा चिरी तेमा हो,
बेड़ा रे दो बेड़ा चुरचू....ऊ...ऊ...ऊ... ।।7।।
कचा चोवा बोरो तिग्ड़ा हो,
बुरू पोटोः एंगा तिंगड़ा...अ...अ....अ.... ।।8।।
कचा चोवा चिरी तिग्ड़ा हो,
बेड़ा चुरचू अपु तिंग्ड़ा....अ...अ...अ... ।।9।।

दुरंग-84

राग - गेना
विषय - बन्दा को विषय
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

इकिर दः

नुपल-बा निकिर दो गुले गुलेय,
तड़य-बा बन्देला
बिजिर-बलंग्ड़ ।।1।।
नोकोए गे रेयाड़नते गुले गुलेया,
चिमय गे लुमेन ते
बिजिर बलंग्ड़ ।।2।।
सेकारी सरंगा रेयाड़न गुलेगुलेया
बमाड़े बगौती लुमेन
बिजिर बलंग्ड़ ।।3।।

हे (मानव) मुझे इसका पता नहीं है (फिर भी)
चुरचु तो मेरे पिता है। ।4।।

दुरंग-84

राग - गेना
विषय - जलाशय के बार में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

जलाशय

उपल-बा नाम जलाशय कैसा
काले बादल सरीखे दिख रहा है?
(उधर) तड़य-बा नामक तालाब भी
कैसा विशाल झिलमिला रहा है? ।।1।।

अहा! कौन वहाँ स्नान करेगा
ऐसा डरावना दिख रहा है?
अरे! कौन वहाँ डुबकी लगायेगा
ऐसा विशाल दिख रहा है? ।।2।।

शिकारी योद्धा ही स्नान करेंगे
जो डरावना दिख रहा है।
पण्डित-ब्रह्मण ही वहाँ डुबकी
लगायेंगे जो विशाल दिख रहा है। ।3।।

दुरंग-85

राग - गेना
विषय - बा-संगेन नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

बा-सोवन

चिकन बा मईम बा तादा
हुरूम सुकु बियुरेन तान...न...न....।
मेरेकन डली न मईम डलि तादा,
लुपुः तेरोम सेकोरेन तान्...न...न...।।1।।
सराजोम बा नेयग्ड़ बा तादा,
हुरूम सुकु बियुरेन तान...न...।
सुड़ा संगेन नपग्ड़ डलि तादा,
लुपुः तेरोम सेकोरेन तान...न...।।2।।

दुरंग-86

राग - गेना
विषय - अड़ः सिद् कुड़ि को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

कमि होड़ो को

गड़ा-2 ते मेतम् लोरे-2 ते,
नोकोए काकलय,
मेतम् चिमय रूगुमे।।1।।
अड़ाः सिद् को मेतम् हईको नरेः को,
इन्कु काकलय,

दुरंग–85

राग – गेना
विषय – खुशबू के बारे में
समय – अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

खुशबू

अहा! कौन–सा सुगंधित फूल खोंस रखी है बिटिया कि
तुम्हारे चारों ओर मधुमक्खी मड़राने लगे हैं?
अहा! किस पेड़ की कोपलें कान पर लगा रखी है बिटिया कि
तुम्हारे चारों ओर मधुमक्खी (छोटा) भिनभिना रहे है? ।।1।।

सखुए का फूल खोंस रखी हूँ माँ कि मेरे चारों ओर
मधुमक्खी मड़राने लगे हैं।
सखुए के कोंपले कान पर लगा रखी हूँ माँ कि
मेरे चारों ओर छोटा मधुमक्खी भिनभिना रहे हैं।।2।।

दुरंग–86

राग – गेना
विषय – काम काजी महिलाओं के विषय में
समय – अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

काम–धन्धे के लोग

नदी के किनारे कहो या
नाले के अगल–बगल,
कौन आवाज दे रहा है तथा
कौन आहट दे रहा है? ।।1।।

अरे (शायद) साग तोड़ने वाली औरत
या मछली पकड़ने वाले लोग होगें

मेतम् चिमय रूगुमे । ।2 । ।
काको सिदाना मेतम् काको साबना,
इन्कु काकलय,
मेतम् इन्कु रूगुमे । ।3 । ।
उपएः लुड़का गे मेतम् उपए टुंकीगे
इन्कु काकलय,
मेतम् इन्कु रूगुमे । ।4 । ।

दुरंग-87

राग - गेना
विषय - बा को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

बा

सी-तला रे मई, गोड़ा तला रे,
सी-नटल बा ना मई, बलेः बरंगू । ।1 । ।
होरोए में मई, जंगि में,
सी-नटल बा ना मई, बलेः बरंगू । ।2 । ।
गुतुई में मई, गलंग्ड़े में,
सी-नटल बा ना मई, बलेः बरंगू । ।3 । ।

वेही आवाज दे रहे हैं,
शायद वही लोग आहट दे रहे हैं । ।2 । ।
हाय! वे साग भी नहीं तोड़ पायीं
तथा मछली भी नहीं पकड़ सके
वहीं लोग आवाज दे रही हैं और
वहीं आहट दे रहे हैं । ।3 । ।
ओह! उनके आँचल खाली पड़ी है
तथा उनके टोकरी भी खाली पड़ी है
वहीं लोग आवाज दे रही हैं और
वहीं लोग आहट भागा दे रहे हैं । ।4 । ।

दुरंग-87

राग - गेना
विषय - फूल के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर ।

फूल

देख बेटिया, खेती में कहो
या टाँड़ पर, सर्वत्र अटल फूल
एवं कोमल बाबला उग आये हैं । ।1 । ।
हे बिटिया अघवारी करो और
हिफाजत करो, अटल फूल और कोमल
बाबाल का । ।2 । ।
अहा! फूलों को पिरोओ तथा उनका
माला गूँथों कोमल बाबजा का । ।3 । ।

दुरंग-88

राग - गेना
विषय - दंगड़ि कुड़ि होन नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

दंगड़ि कुड़ि

सेन दलः दुलुः रेले लेल लेद् मेया मई,
नकीः बड़य-बुडुईः रेले चिना लेद् में।।1।।
लेलमें-2 गेना मई सुकु जुम्बड़ा जन्
चिनामें-2 गेना मई लदसा-लन्दिड़ी जन्।।2।।
सुकु जम्बड़ लेकना मईम् जुम्बड़ जन,
तयर नाड़ि लेकना मईम् लदसा-लन्दिड़ी जन।।3।।

दुरंग-89

राग - गेना
विषय - बा को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

बा-दारू

नोको मुलि रेया हो मेतम,
जुड़ी दारू गोलन्ची...ई...ई...ई...।
चिमै मुलि रेया हो मेतम्
पन्ती गँड़ा चमैलू...उ...उ...उ...।।1।।
सिंगी तुरोः रेया हो मेतम्,
जुड़ी दारू गोलन्ची...ई...ई...ई...।
चण्डुः मुलुः रेया हो मेतम्
पन्ती गँड़ा चमैलू...उ...उ...उ...।।2।।

दुरंग–88

राग – गेना
विषय – जवान कन्या के विषय में
समय – अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

युवा लड़की

मैंने तुम्हें धूल में खेलते हुए देखा था
साज–शृंगार करते पहचाना था।।1।।
अब देखते ही देखते कद्दू की तरह फैल गयी
पहचानते ही पहचानते खीरा जैसा मोटी हो गयी।।2।।
हाय! तू तो कद्दू का जाल जैसा विशाल छा गयी
ओह! खीरे का फल जैसा मोटी–सोटी हो गयी।।3।।

दुरंग–89

राग – गेना
विषय – फूल–पौधों के विषय में
समय – अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

फूल–पौधे

अरे भाई किधर में हैं वे
जोड़े गोल चीन फूल के पौधे?
अहा! किस जगह पे हैं
पंक्तिबद्ध चमेली के पौधे?।।1।।
देखो देखो, पूरब दिशा में हैं
वे गोलचीन के जोड़े पौधे
और देखो, पश्चिम में हैं वे
पंक्तिबद्ध चमेली के पौधे।।2।।

बा-नुराय बराया हो मेतम्
जुड़ी दारू गोलन्ची...ई...ई...ई...।
मोए मोचो-मोचोआ हो मेतम्
पन्ती गँड़ा चमैलू...उ...उ...उ...।।3।।

दुरंग-90

राग - गेना
विषय - चेड़ें को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

सेन्देरा

नोकोरेम् नटा लिअः दादा,
टापु-2 कोकोर दो...ओ....ओ....।
चिमय कोरेम जुड़ः लिअः दादा,
बेंगा-बंगी किकिर दो...ओ....ओ....।।1।।

जोजो को जुम्बलय दादा
टापु-2 कोकोर दो...ओ....ओ....।
नुलि को नम्बराय दादा,
बेंगा-बँगी किकिर दो...ओ....ओ....।।2।।

दुरंग-91

राग - गेना
विषय - दुकु-जंजाल नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

बाड़ी दः

पिसिर-2 गमा लेद् गतिंग्ड़,
दे गतिंग्ड़ चतोमिंग्ड में...ए...ए...।

अहा! कैसा हँसते फूल गोलचीन के।
और चमेली की कैसी
सुन्दर कलियाँ।।3।।

दुरंग-90

राग - गेना
विषय - शिकारियों के बारे में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

शिकारी

हे दादा, इस बुढ़ाउ उल्लु को
आपने कहाँ पकड़ा था?
और यह रंग बिरंगी किकिर को
कहाँ हाथ लगा?।।1।।

हे भाई! इस बुढ़ाउ उल्लु को
मैंने इमली के झुरमुठ से पकड़ा था
और यह किकिर आमों के अमराई
से पकड़ा था।।2।।

दुरंग-91

राग - गेना
विषय - वर्षा के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

बाढ़ का पानी

रिम-झिम वर्षा हो रही है,
हे सखि, तुम्हारी छतरी में मुझे शरण दो।

जड़म-2 रंपि लेद् संगईग्ड़,
दे संगईग्ड़ चतोमिंग्ड में...ए...ए... ।।1।।
(हाय हाय!) मरंग्ड़ गड़ा पेरेः जन गतिंग्ड़,
दे गतिंग्ड़ चतोमिंग्ड में...ए...ए... ।
हुड़िग्ड़ नाई चड़ंग्ड़ जन संगईंग्ड़,
दे संगईंग्ड़ चतोमिंग्ड में...ए...ए... ।।2।।
(हाय हाय!) पुईला चौली कोटोंग जन् गतिंग्ड़,
होन लंग्ड़ को रागे तन्
हन्डुआ-लुपुः केसेद् नन संगईंग्ड़,
गेंडालंग को नियम तन ।।3।।

दुरंग-92

राग - गेना
विषय - अँडन्दि नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

हिंसिंगा

नम् जुड़ि तिंग्ड़ा चिना दाई,
डड़ी दः रेम् नेराईंग्ड़ ।
नम् जोता तिंग्ड़ा चिना दाई,
सुई दः रेम् सेगेदिग्ड़ा ।।1।।
कना-दाई कईंग्ड़ हिरू मैना हो,
नलो दाईम् नेराईग्ड़ा ।
कना-दाई कईंग्ड़ गोड़ो मेना हो,
नलो दाईम् सेगेदिंग्ड़ा ।।2।।

सर-सर करके आँधी आ रही है,
हे बहन, तुम्हारे छाते के नीचे मुझे आश्रय दो।।1।।
हाय! महानदी भर गयी,
हे सखि, मुझे अपनी छतरी में छिपा लो।
हाय! यह छोटा नाला तट को पार कर गया
हे बहन मुझे अपने छाते के नीचे शरण दो।।2।।
घर में खोराख पहुँचना बन्द हो जायगा,
हे सखि, बाल-बच्चे भूख से मर रहे हैं।
घर में बाँस-बुकनी पहुँचना समाप्त हो जायगा,
हे बहन, नाती-पोतों में हाय तोबा मच गया है।

बाँस-बुकनी - बाँस के करील को काट कर सुखाते हैं जो खाने के काम में आते हैं।

दुरंग-92

राग - गेना
विषय - डाह के बारे में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

डाह

हे दीदी क्या मैं तेरी हम उम्र का हूँ कि
रोज-रोज मुझे रास्ता-घाट पर गाली दिया करती हो?
हे दीदी, क्या मैं तेरी हम जोली हूँ कि
दिन-प्रति-दिन मुझसे बक-झक करती रहती हो?।।1।।
नहीं दीदी नहीं, मैं तेरे सौत नहीं बनूँगी
ऐसा गाली-गलौज मत दिया करना।
नहीं दीदी नहीं, तेरे घर बलातू नहीं घुसूँगी
ऐसा बक-झक मत दिया करना।।2।।

नईयो दाई मेनः ईयः हो,
सुकु बा रे सेपेड़ेद् ।
नईयो दाई मेनः ईयः हो,
तयर नाड़ी बिजिला । ।3 । ।

सुकु बा रे सेपेड़ेद् हो,
कलोम केन कलोमा ।
तयर नाड़ी बिजिला हो,
सतोम केन समोका । ।4 । ।

चउडल चिः तोलेया हो,
कलोम केन कलोमा ।
पलकी चिः नेयोड़ाया हो
सत्रोम केन सतोमा । ।5 । ।

दुरंग–93

राग – गेना
विषय – नाड़ी–जनुम नगेन
सोमय – अगन एनेटेः–उईउः दः सोमते
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे ।

जनुम

जनुम–जनुम् गो, सीस गोर जनुम दो,
नाड़ी–नाड़ी गो बलेः सेयाड़ी नाड़ी । ।1 । ।

जनुम् लेनईग्ड़गो सीसगोर जनुमेते,
बकोः लेनईंग्ड़गो, बलेः सेयाड़ी नाड़ीते । ।2 । ।

हसुईग्ड़ जद् चरि बीरी गो,
बबता जदईग्ड़ टुन्डेग्ड़–गेनेर । ।3 । ।

नेगईग्ड़ मेनः कोएओंग ओंग मोनिंग्ड़,
नपुईग्ड़ मेनः सपारेन सनईग्ड़ । ।4 । ।

हे दीदी, (सुनलो) मेरी भी प्रेमी है जो
लौकी फूल के समान छरहरा बदन वाला है।
हे दीदी (समझो) मेरा भी अपना नवजवान है जो
खीरे के लरंग के समान लम्बा कद वाला है। ।3।।
(लेकिन) हे दीदी, वह आने वाला
साल शादी की बात करता है।
(पर) वह साल-पर-साल
शादी की बात करता है। ।4।।
ओह, शायद डोली न हो,
वह अगले साल की बात करता है।
हाय! शायद पालकी न हो,
वह साल-दर-साल बात करता है। ।5।।

दुरंग-93

राग - गेना
विषय - काँटों के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

काँटा

ये काँटे सीसगोर के हैं
और ये सेयाड़ी लरंग के काँटे हैं। ।1।।
हाय! पाँव पर काँटे गड़ गये
उफ! बदन पर सेयाड़ी काँटे चुब गये। ।2।।
हाय! विष लहर रहा है जिससे
उफ! खुजली बढ़ रहा है जहाँ पर। ।3।।
हाय! माँ की गोद में जाने का मन हो रहा है।
उफ! पिता के बाँहों में समा जाने को जी चाहता है। ।4।।

दुरंग-94

राग - गेना
विषय - जो-बा को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

हलंग

ओको मुलिम् हलंग्ड़ केना मईना,
कोचे-ते-कोचे मन्दुकम।
चिमय मुलिम तुम्बल केना मईना,
डाडु ते-डाडु सरजोम।।1।।

सिंगी तुरोः ईंग्ड़ हलंग्ड़ केना दादा,
कोचे-ते-कोचे मन्दुकम।
चण्डुः मुलुः ईंग्ड़ तुम्बल केना दादा,
डाडु ते-डाडु सरजोम।।2।।

दुरंग-95

राग - गेना
विषय - अयः कुड़िमः नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

अँड़ब्दि कुड़ि

गोलनची बा हिरि-जीरी हो,
तला निदम् बोलोआ।
पैकी बा जोलो-मोलो हो अदिग्ड़
निदम् सोड़ोआ।।1।।

दुरंग–94

राग – गेना
विषय – चुनने के विषय में
समय – अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

चुनना

हे बहन! किस ओर महुआ चुनने गयी थी कि
ये सब–के–सब अधकिले बलियाँ हैं।
ये बहन! किस जंगल में खोजने निकली थी कि
ये सब–के–सब ताजा सखुए के बीज हैं।।1।।

हे दादा, मैं पूरब दिशा में चुनने गयी थी
इसलिये से सब अध खिले कलियाँ हैं।
हे दादा, मैं पश्चिम दिशा में खोंजने गयी थी
इस कारण में सब के सब ताजा सखुए के बीज मिले।।2।।

दुरंग–95

राग – गेना
विषय – विहाहित स्त्री के बारे में
समय – अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

विवाहित स्त्री

प्रिये! तुम तो गोलचिन के फूल के समान सुन्दर हो
(पर) आधी रात को घर आती हो।
हे प्रिये! पैकी फूल के समान तेरा बदन है
(पर) गये रात घर पहुँचती हो।।1।।

तला निदम् बोलोआ हो,
तला निदम् नेपेरंग्ड़ा।
अदिम निदम् सोरोआ हो,
अदिग्ड़ निदम् सेपेगेदा।।2।।
बगे रेदो बगे तईमें हो,
तला निदम्ू नेपेरंग्ड़ा।
रड़ा रेदो तईमें हो,
अदिग्ड़ निदम-सपेगेदा।।3।।
नम बड़े बगे किंग्ड़ हो,
तोवा बा ईंग्ड़ बा जोम।
नम बड़े रड़ा किंग्ड़ हो नटल
बाईग्ड़ डली जोमा।।4।।
तोवा बाईंग्ड़ा बा तारे हो,
सै तेम् लेलिंग्ड़ा।
नटल बाईग्ड़ डलि तारे हो,
मोचो-मोचोम् लन्दाया।।5।।

दुरंग-96

राग - गेना
विषय - बलेः सोमय नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

बलेः सोमय

हुड़िंग्ड़ रे सुकुईग्ड़ तई केन,
निदाईंग्ड़ कुमु बुगिन कुमु।।1।।
(है है) एंगा अपु दुलाड़ रे
सुकुईग्ड़ तई केन।।2।।

आधी रात घर आती हो
(ऊपर से) मुझे गाली भी दिया करती हो।
गये रात घर पहुँचती हो
(ऊपर से) मुझसे बक-झक भी किया करती हो।।2।।
हे नाथ! अगर मैं तुम्हें आधी रात को गाली देती हूँ
(तो) मुझे छोड़देने में तुम स्वतंत्र हो।
हे नाथ! अगर मैं गये रात तुमसे बक-झक करती हूँ
तो तुम्हें हमारी बन्धन तोड़ने की छूट देती हूँ।।3।।
(कोई बात नहीं) यदि मुझे छोड़ देंगे तो
तोवा फूल दूसरी शादी में खोंस लूँगी।
(भय नहीं) यदि हमारा सबंधविच्छेद करते हैं तो
अटल फूल दूसरा सबंधों में खोंस लूँगी।।4।।
हे नाथ! यदि तोवा फूल खोंसे रहूँगी तो
तुम मुझे तीरक्षी नजर से देखने लगोगे।
हे नाथ! यदि अटल फूल खोंसे रहूँगी तो
तुम मुझे लालच का मुस्कुराहट फेंकोगे।।5।।

दुरंग-96

राग - गेना
विषय - बचपन के समय के बारे में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

बचपन

अहा! जब मैं बालक था
तो कितना सुख में था।।1।।
रात को मधुर-मधुर
सपना देखा करता था।।2।।

हगा-मिसि सुगड़ रे
बुगि निंग्ड़ कुमु । ।3 । ।

दुरंग-97

राग - गेना
विषय - चेण्ड़ें को नगेन
सोमय - अगन एनेटेः-उईउः दः सोमते
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

चितरि-असाकल किंग

बुरू चेतन चितिरी किंग्ड़ हो,
नराए लतर, नसाकाल किंग्ड़ । ।1 । ।
चियाः चितिरी कम हड़ागुनाया,
चिया नसाकाल कम नोसो रेनू । ।2 । ।
गतिमू दो अँड़ादिन तनाया
संगमे दो कोड़ा दिन तानू । ।3 । ।
गतिमे दो डुगुमुगु चउडले ते,
संगमे दो गाजा बाजा बजुड़ियाँ ते । ।4 । ।

करमा

दुरंग-98

राग - करम
विषय - ब्रोज-बाला कृष्ण । पिरिति नगेन
सोमय - करम चण्डुः
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे ।

ओह! यह इसलिये था कि तब
मुझे माँ-बाप का भरपूर प्यार मिलता था।
और भाई-बहनों के प्यार में
मधुर-मधुर सपना देखा करता था।।3।।

दुरंग-97

राग - गेना
विषय - तीतर-बटेर के विषय में
समय - अगहन से बरसात के शुरू तक
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

तीतर बटेर

देखो टीले के ऊपर दो तीतर बैठे हैं।
और तराई में दो बटेर भी दिखाई दे रहे हैं।1।।
ऐ तीतर तुम नीचे क्यों नहीं उतरते?
और बटेर! तुम भी तराई पर क्यों नहीं चले आते?।।2।।
देखो तुम्हारी सखि भी शादी रचा रही है
और तुम्हारी बहन भी मांग भर रही है।।3।।
अहा! सखि शादी रचा रही है सजा हुआ डोली में।
अहा! बहन माँग भरा रही है गाजे-बाजे के साथ।।4।।

दुरंग-98

राग - करमा
विषय - कृष्ण के विषय में
समय - भादो महीना में
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

ब्रोज बला कृष्ण

नोकोतिया ब्रोजोबाला,
सुगड़ा सोन दूर कला।
निदि केदाए सोबेन नेला-खेला...है...है...।
निदि केदाए सोबेन नेला-खेला
ओगो दोति सेनेअब् दोला।।1।।

नईग्ड़ दोरेईग्ंड़ चिका जना,
निदा सिंगी नुबः जना,
तिः इदिंग्ड़ पे रे दोतिरे दोला...है...है...।
दिः इदिंग्ड़ पे रे दोति रे दोला।
ओगो दोति सेनेअब् दोला।।2।।

दुरंग-99

राग - करम
विषय - दंगड़ी सोमय रेयः कजि
सोमय - करम चण्डुः रे
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

दंगड़ी सोमय रेयः कजि

सेतः गतेईग्ड़ रोवा केन,
तिकिन सींगी होका जन,
निरे सेने जोलाईग्ड़ रकब लेदा, है है
निरे-सेने जोलाईग्ड़ रकब लेदा
जोजोहातु कुडःएईग्ड़ तेला केन।।1।।

बाल कृष्ण

कृष्ण की प्रतीक्षा में गोपियों की अन्तर्वेदनाः-
री! सखियों, देख-देख हमारा बृज बाला कहाँ
गायब हो गये। उसकी अपूर्व सुन्दरता तो देखते ही
बनता है। उसकी नाक-नख्श, चमकना,
मृदुलता आदि में मानो मानव के सारे सुन्दरता
मौजूद हों। यही नहीं, उनके अचानक चले जाने
के साथ-साथ हमारा भी सब कुछ ले गये। नहीं,
चलो जल्दी उन्हें कहीं ढूँढ़े।।1।।

हे सखिगण! मुझे तो क्या हो गया है। मुझसे
अब चला ही नहीं जाता। मेरी आँखों के सामने
अन्धियाला छा गया है। हे सखिगण, मुझे पकड़
उनके पास ले चलो। चलो चलें उनकी खोज में
जल्दी चलो....।।2।।

दुरंग-99

राग - करमा
विषय - जवानी के बारे में
समय - भादो महीना
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

भरी जवानी

हाय रे दईया, उठ बिहान खेत जा कर धान रोपती रही।
दोपहर को जा कर रोपनी खत्म हुई।
दौड़ा-दौड़ी, चढ़ान होते हुए घर आयी।
घर आ कर जो जो गाँव जा कर मजदूरी ली।।1।।

रूडुंग्ड़ केदईग्ड़, सेटेः केदईंग्ड़,
उतु केदईंग्ड़ मन्डि केदईंग्ड़,
अखाड़ा रे दुमंग्ड़ साड़ी तना, है है
अखाड़े रे दुमंग्ड़ साड़ी तन
सोंगति को तिंगुतागी तन । ।2 । ।

दुरंग–100

राग – करम
विषय – सेनोःतन सोमय नगेन
सोमय – करम चण्डुः मुलुः रे
मुहुर्त – अखाड़ा कोरे ।

सुकु सामय रेयः कजि

ने हातु ताला रे
नवा जोनोम होबा लेन, है है
नवा जोजोम होबा लेन
हेला रे दोला रे
समोड़ोम सोमय सेनोः तना है... । ।1 । ।
कदला दारू लेका,
सुकु सुकुम सेनाः कदा, है है
सुकु सुकुम सेनाः कदा,
हेला रे दोला रे
पड़िया, पचोन ओरंग्ड़ तान रे । ।2 । ।
तीरे सकोम बोरे बोर,
होटोः रे मन्दुली सोन, है है
होटोः रे मन्दुली सोन,
हेला रे दोला रे
तीरे सकोम पोला साड़ी... । ।3 । ।

(फिर) उसे कूट-पीस कर साग-भात बनाई।
(तब तक में रात घिर आयी) और सुनती
हूँ कि अखाड़े पर मान्दर-ढोल की आवाज
आने लगी है।
हाय! शायद वहाँ मेरी सखि-सहेलियाँ मेरी
प्रतीक्षा कर रहीं होंगी।।2।।

दुरंग-100

राग - करमा
विषय - जीवन चक्र के बारे में
समय - भादो महीना में
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

सुखमय जीवन

इस गाँव में एक शिशु कन्या का शुभागमन हुआ था।
और साथ साथ गाँव खुशी में झूम उठ गया था। पर
समय तो बीतता जा रहा था।।1।।

कालान्तर में वह कन्या केले की भाँति विशाल अल्हड़ बन गई।
उसकी रसीली चाल से सभी मुग्ध होने लगे।
उधर, कमर पर पड़िया पचोन का लहराना
अलग लोगों को आकर्षित कर रहा था।।2।।

दोनों हाथों में बेरा पहिनी हुई है।
गले पर चाँदी के मन्दोलीा शुशोभित है।
इधर-उधर चलती-फिरती है तो हाथों
में बेरा तथा पाँव के ऊँगलियों में
रिंग के झन-झनाहट मन को मोह
लेते हैं।।3।।

बुदु बाबुई काजि तान,
अलो रे पे हिया तिंग्ड़ा, है है
अलो रे पे हिया तिंग्ड़ा,
हेला रे दोला रे
एना सोमय सेनोः तान रे । ।4 । ।

द्रुरंग–101

राग – करम
विषय – जाति डुबाओ
सोमय – करम चण्डुः मुलुः रे
मुहुर्त – सोबेन सोमय कोरे ।

जाति डुबाब

दः नगुईंग सेन केन,
चोके दईना पदा किंग्ड़ा
कचि बोले जाति सेनोः जन, है है
कचि बोले जाति सेनोः जन,
हिया तिंग्ड़ तेईग्ड़ चबा गिडि जन । ।1 । ।
हगा होन को हुण्डिन जन,
नेया गेको मुण्डि केद,
एंगा सिमते जाति चबा जन, है है
एंगा सिमते जाति चबा जन,
हियतिंगते तेईंग्ड़ चबा गिड़ि जन । ।2 । ।

बुदु बाबू के विचार के अनुसार इन
सारी बातों को ले कर कोई चिंता
नहीं करना चाहिए। क्योंकि समय को
कोई नहीं पकड़ सकता। जीवन में समय का आना
जाना निश्चित है। जीवन-मरण निश्चित है।
इससे घबड़ाने की कोई बात नहीं है।।4।।

पचोन - ताँत का मोटा वस्त्र
बेरा - हाथ में पहना जाने वाला चाँदी का हार
रिंग - पाँव के ऊँगलियों में पहना जाने वाला चाँदी का रिंग
बुदु बाबू - मुण्डा समाज का एक प्राचीन गीतकार

दुरंग-101

राग - करमा
विषय - अछूत के बारे में
समय - भादो महीना में
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

अछूत

घाट पर से पानी लाने गयी थी।
हे दीदी, यहाँ एक मेढ़क ने मुझे लात मारी।
तो अब मेरी जाति न चल गयी?
दीदी, इसी से मैं चिन्ताग्रस्त हूँ।।1।।
इसी को ले कर गाँव में भाईजनों की बैठक हुई।
वहाँ फैसला हुआ कि मेरी जाति चली गयी।
लेकिन, बाद में उन्होंने मुझे, एक मुर्गी को
भगवान के नाम आर्दश कर, अपने जाति कुल
में ले आया। यह देख कर मैं खुशी से झुम उठी।।2।।

दुरंग–102

राग - करम
विषय - कृष्ण माईन नगेन
सोमय - करम चण्डुः मुलुः रे
मुहुर्त - सोमय सोमय कोरे।

कृष्ण दोरोशोन

ओ हो रे छैला, दो लाबु नेलाउवा
बिर बितर जोला रेः डुबा कना, है है
बिर बितर जोला रेः डुबा कना,
ओगो दुति दोलाबु नेलाआ।।1।।

नकिः गेन पे सुपीदेन पे, नीला साड़ी किचिरिन ये
तिति रिरि रूतु साड़ी तन, है है
तिति रिरि रूतु साड़ी तन,
ओगो दुति दोलाबु ने लाउवा।।2।।

दुरंग–103

राग - करम
विषय - रसिका रसि नगेन
सोमय - करम चण्डुः मुलुः रे
मुहुर्त - सोवेन सोमय कोरे।

बा–चण्डुः

बा चण्डुः मुलुः लेन,
सोबेन बा दो बा जन,
गतिंग रे–गतिंग्ड़ रे दोला गतिंग्ड़
बा लंग्ड़ गुतु दोला चिरे।।1।।

सेनोः गलंग्ड़ वृन्दा वन

दुरंग–102

राग – करमा
विषय – कान्हा दर्शन के बारे में
समय – भादो महीना में
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

कान्हा दर्शन

चलो रे चलो, हम कान्हा-दर्शन को चलें।
जंगल के बीच, ढलान पर वह बैठा है।
सखि रे सखि, चलो हम उनका दर्शन करने चलें।।1।।
हाँ री हाँ, चलो जल्दी से अपने-अपने बाल सवाँरो।
कंधी बगैरह से बालों को चिकना करो और,
नीले रंग की झल-मल करती साड़ी पहनो।
उफ! सुनो री सुनो, उधर से उसकी बाँसुरी
की आवाज, "तिरि रिरि" सुनाई पड़ रही है।
अहा! चलो जल्द से सपरो, हम उनका दर्शन
करने को चलें।।3।।

दुरंग–103

राग – करमा
विषय – खुशियाली के बारे में
समय – भादो महीना में
मुहुर्त – अखाड़ों पर।

सरहुल का महीना

सरहुल का महीना चढ़ आया है,
सर्वत्र जंगल में सभी प्रकार के फूल फूटे हैं।
हे प्रिये! चलो जंगल जा कर फूलों का
माला गूँथे।

दाँड़ाँय लंग्ड़ कुन्ज वन,
गतिंग्ड़ रे गतिंग्ड़ रे दोला गतिंग्ड़
बा लंग्ड़ गुतु दोलाचिरे।।2।।
डेरायालंग्ड़ नीले सुतम
चटःयलंग्ड़ रंगा चरिः
गतिंग्ड़ रे गतिंग्ड़ रे, दोला गतिंग्ड़
बा लंग गुतु दोला चि रे।।3।।

दुरंग-104

राग - करम
विषय - पिरिति नगेन
सोमय - करम चण्डुः मुलुः रे
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

पिरिति पाला रेयः कजि

एन दिलंग्ड़ होरा रे,
कजी लेदम् सुगाड़ रे
एना काजी जीरे टोगे जन रे
एना काजी कगे रिड़िग्ड़ोः।।1।।
गुड़ चिरेम् लेय लेद,
मँड़ि तेचिम जगर लेद्,
एना काजी जीरे टोगे जन रे
एना कानी कगे रिड़िग्ड़ोः।।2।।
सिंगी दो रेंग्ड दाड़ाँ मेया,
निदा दोरेंग्ड़ कुमु मेया,
एना काजी जीरे टोगे जन रे
एना कानी कगे रिड़िग्ड़ोः।।3।।

अहा! हम वृन्दावन को जायेंगे और
कुन्जवन का पता करेंगे।
हे प्रिये! वन जा कर फूलों का माला
गूथेंगे-2
और वहाँ जा कर हम नीले रंग का
डोरा तानेंगे, फिर बाँस-बित्ती बनायेंगे।
हे प्रिये! वन जाकर फूल माला गूँथेंगे।।3।।

दुरंग-104

राग - करमा
विषय - प्रीत-पाला के बारे में
समय - भादो महीना में
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

प्रीत-पाला

हे प्रिये! उस दिन राह पर
तुमने मुझे कुछ कहा था।
वह बात मेरे हृदय में तीर की तरह जा लगी।
और वह भुलाए नहीं भूल पा रहा हूँ।।1।।
अहा! उस कथा में तुमने क्या गुड़
का मिश्रण किया था?यही कारण
रहा होगा कि वह बात मेरे हृदय पर
चुभ गयी जो भुलाए नहीं भूल पा रहा हूँ।।2।।
तुम्हारी याद में, दिन को तुम्हें खोजता फिरता हूँ।
रात को तुम्हें सपनों में देखता हूँ।
आह! वह बात मेरे मन में बस गयी जो
भुलाए नहीं भूल पाता।।3।।

दुरंग-105

राग - करम
विषय - छैला दंगड़ी नगेन
सोमय - करम चण्डुः रे
मुहुर्त - अखाड़ा कोरे।

डिण्डा दंगड़ी

बोः चेतन् ससग्ड़ बिण्डा,
बिण्डा चेतन, चटु मेनः, चोम-चोम-2
डिण्डा दंगड़ी पोला तम दो निरल साड़ी तन।।1।।
मंड़ि-मंड़ीम सेने तद, तरा ती दोम् हिरिचि तद्, चोम-चोम-2
डिण्डा दंगड़ी पोला तम दो निरल साड़ी तन।।2।।
सेने सेनेम सिसिय, लेलेयम अन्दु चुरला बैंकर, चोम-चोम-2
डिण्डा दंगड़ी पोला तम दो निरल साड़ी तन।।3।।

दुरंग-105

राग - करमा
विषय - कँवारी लड़की के बारे में
समय - भादो महीना में
मुहुर्त - अखाड़ों पर।

कँवारी लड़की

सिर के ऊपर पीले रंग का बिण्डा बिण्डा के ऊपर घघरी।
मटकती चाल है तुम्हारी आह लड़की तेरे पाँव की ऊँगलियों से
पोले की छम-छम आवाज आ रही है।।1।।

आह! तुम्हारी मस्तानी चाल, और एक हाथ को आगे-पीछे
डोलाते हुए जा रही हो, हे लड़की! तेरे पैरों पर से पोलों की
छम-छम आवाज आ रही है।।2।।

अहा! तुम जाते-जाते सिसकी भी मारती जाती हो।
और पैरों पर अन्दु तथा बाहों पर बाजुएँ आदि शृंगार को दिखाती जाती हो।
अहा! मटकती चाल में, तेरे पैरों से पोलों की छम-छम आवाज आ रही है।।3।।

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

ISBN : 978-93-85595-07-3

978-93-85595-07-3

मूल्य : 300.00 रू.